जारी है मंदिरों में तोड़-फोड़ 7 | देवदूत बने संघ के स्वयंसेवक 9 | काश! बच्चों को संस्कृति का ज्ञान कराया होता 13

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

आषाढ़ कृष्ण 13,वि.2080,युगाब्द 5125, 16 जून, 2023

निष्पक्ष व न्यायसंगत शासन का प्रतीक–सेंगोल

patheykan@gmail.com

चिंतनीय

16 मई का अंक प्राप्त हुआ। संपादकीय में माननीय न्यायालय के द्वारा समलैंगिक विवाहों को मान्यता देने के बारे में पढ़ा। सुनवाई के दौरान यदि समलैंगिक विवाह के पक्ष में निर्णय आता है तो हमारे सामाजिक ढांचे पर इसका जो विपरीत प्रभाव पड़ेगा उस पर चिंता होना स्वाभाविक है। यह भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक जीवन के विपरीत है। कुछ समय पूर्व माननीय न्यायालय के द्वारा लिव इन रिलेशनशिप तथा इसके माध्यम से उत्पन्न संतानों को कानूनन मान्यता देने के दुष्परिणाम समाज वर्तमान में भुगत रहा है। सामाजिक संगठनों एवं संस्थाओं के द्वारा पुरजोर विरोध नहीं करने का यह परिणाम है कि आज श्रद्धा, साक्षी की निर्ममता पूर्ण हत्या जैसी घटनाओं की बाढ़ सी आ गयी है। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के विरुद्ध कानूनों का हमें पुरजोर विरोध करना चाहिए।

▪ **दिनेशचन्द्र मीना**, दौसा

सटीक संपादकीय

1 मई के अंक में दिए गए संपादकीय में बिल्कुल सटीक वर्णन किया गया है कि मुगल इस देश के अपने नहीं बल्कि आक्रांता, अत्याचारी व आततायी थे। इस देश के इतिहास में उनके लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। यदि सनातन धर्म और संस्कृति की रक्षा करनी है तो सनातन धर्म और संस्कृति के लिए संघर्ष करने वाले क्रांतिवीरों, देश के लिए त्याग व बलिदान करने वाले शहीदों तथा यहाँ के राजा-महाराजाओं का इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए न कि मुगल आततायियों का।

▪ ***रामावतार मित्तल***
49, हनुमाननगर, सवाईमाधोपुर

आभार

1 जून का अंक प्राप्त हुआ। डी-लिस्टिंग महारैली के संदर्भ में पाथेय कण पत्रिका ने अपने मुख पृष्ठ पर स्थान देकर इस विषय को जन-जन तक पहुंचाया है। इसके लिए पूरे पाथेय कण परिवार को जनजाति सुरक्षा मंच की ओर से हार्दिक आभार ।

▪ ***जगदीश कुलमी,*** *प्रदेश संगठन मंत्री, राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद, उदयपुर*

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

■ **धर्म व संस्कृति के रक्षक भगवान बिरसा मुंडा**
https://patheykan.com/?P=20878

■ **मुस्लिमों का अपने मुस्लिम बंधुओं से भी सतत टकराव क्यों**
https://patheykan.com/?P=20909

■ **खालिस्तान कॉन्सपिरेसी और कांग्रेस**
https://patheykan.com/?P=20875

आत्मघाती

पाथेय कण, 16 मई का अंक मिला। अंक में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समलैंगिक विवाह के बारे में जिस प्रकार से प्राथमिकता के साथ सुनवाई की जा रही है यह स्थिति देश, समाज व हमारी सनातन संस्कृति के लिए बहुत ही आत्मघाती सिद्ध होगी। पाश्चात्य संस्कृति तथा वामपंथी विचारधारा में पले-बढ़े न्यायाधीश महोदय जिस प्रकार से अपनी सोच को पूरे देश पर लादना चाहते हैं उसका पुरजोर विरोध होना चाहिए।

▪ ***सत्ताराम बैनीवाल***
वेडिया, चितलवाना, जालोर

पठनीय पाथेय

पाथेय कण का जम्मू-कश्मीर विशेषांक और 1 मार्च, 2023 का अंक पढ़ने का मौका मिला। दोनों अंक बहुत ही अच्छे लगे। समसामयिक लेख को लेकर गांव के लोगों के बीच पत्रिका की प्रशंसा होती रही है। प्रत्येक शीर्षक और चित्रमय समाचार पढ़कर बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है। अत: यह पत्रिका देश की सेवा अपने लेखों के द्वारा कर रही है, मुझे अत्यन्त खुशी है।

▪ **नन्दकिशोर तिवारी**
ग्राम विकास संयोजक, कैमूर, बिहार

संघ मंत्र का ले अवलंबन

जाति-पांति और छुआछूत को
मिलकर दूर भगायें,
संघ मंत्र का ले अवलंबन
सबको गले लगायें।

अपनी कमजोरी के चलते
हमने बहुत कुछ खोया है,
ऊँच-नीच और अस्पृश्यता ने
बीज जहर का बोया है।

भारत की पावन संस्कृति ने
फिर हमको ललकारा है,
कलियुग में संघ ही शक्ति है
यह सबने स्वीकारा है।

अमीर-गरीब के भेद मिटाकर
सबको गले लगायें,
मिलकर रहे सभी भारत जन
यह सबको समझायें।

संघ मंत्र का ले अवलंबन,
सबको गले लगायें।।

- के.जी.मालव

राष्ट्रनायक सुभाष

पाथेय कण द्वारा लगातार प्रकाशित की जा रही 'राष्ट्रनायक सुभाष चंद्र बोस' बहुत अच्छी लगती है। चित्रकथा के पृष्ठ बढ़ाने तथा धर्म-ज्ञान संबंधी जानकारी का आगामी अंकों में समावेश के लिए आपसे आग्रह है।

▪ ***योगेश कुमार***
जिला पाथेय प्रमुख, अजमेर महानगर

पाक्षिक
पाथेय कण

आषाढ़ कृष्ण 13 से
आषाढ़ शुक्ल 12 तक
विक्रम संवत् 2080,
युगाब्द 5125
16-30 जून, 2023
वर्ष : 39
अंक : 05

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध संपादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग,
मालवीय नगर,
जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें-
व्हाट्सएप से
79765 82011
फोन से
94136 45211
99297 22111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

'अजमेर-92' फिल्म पर हंगामा क्यों ?

जहाँ 'कश्मीर फाइल्स' (फिल्म) ने देश के बहुसंख्यक समाज के एक तबके पर उनके अपने ही देश में आतंकी व जिहादी तत्वों द्वारा किए गए जघन्य अत्याचारों और अपने देश के एक हिस्से से उनके लगभग पूर्ण पलायन के ऐसे मामले को उजागर किया जो वोटों की राजनीति और तुष्टिकरण के कारण देश और दुनिया के सामने आ नहीं पाया था, वहीं 'केरल स्टोरी' फिल्म ने इस हिंदू बहुसंख्यक देश में उसके समाज की बेटियों को जिहादियों द्वारा योजनाबद्ध और शातिराना तरीके से अपने धर्म से विमुख कर मतांतरित करते हुए विश्व के नं. एक आतंकी संगठन आईएसआईएस के चंगुल में फंस जाने की सत्य घटनाओं और लव जिहाद की शिकार हजारों हिंदू-ईसाई लड़कियों की सत्य दास्तानों से परिचित कराया। न जाने कितनी ऐसी घटनाएं देश की स्वाधीनता के बाद घटित होती रही हैं जिनमें आश्चर्यजनक ढंग से पीड़ित था बहुसंख्यक हिंदू समाज का कोई हिस्सा, तो आरोपितों में थे तथाकथित शांतिमय समाज के बिगड़ैल, जिहादी तत्व।

ऐसी ही एक घटना का साक्षी रहा है राजस्थान का अजमेर शहर। एक अविश्वसनीय जैसी दिखने वाली परंतु सत्य घटना। अजमेर में प्रभावशाली परिवारों के लोगों ने स्कूल और कॉलेज की 300 से ज्यादा लड़कियों को अपने जाल में फंसाकर उनका यौन शोषण किया। दावा किया गया कि इनमें से कई लड़कियों के साथ गैंगरेप भी हुआ। बताया जाता है कि आरंभ में कुछ लड़कियों को, धोखे या ब्लैकमेल से खींचे गए उनके न्यूड फोटो और वीडियो क्लिप का डर दिखाकर उनका यौन शोषण किया। इसके बाद उन्हें डराया और धमकाया जाने लगा। लड़कियों पर उनकी सहेलियों को साथ लाने का दबाव बनाया जाता, ऐसा नहीं करने पर उनके अश्लील फोटो घर वालों को दिखाने सहित अन्य तरह की धमकियां दी जाती थीं। लड़कियां खुद को बचाने के लिए अपनी सहेलियों को किसी बहाने साथ ले जातीं। सबसे दर्दनाक बात तो यह है कि मामले के खुलने पर बाद कई लड़कियों ने आत्महत्या कर ली। इन दरिंदों का शिकार हुई कई लड़कियों के परिवारों को अजमेर छोड़ना पड़ा। मामले की जांच में इस कांड के आरोपियों के खुलासे हुए तो सब हैरान रह गए। ज्यादातर आरोपी रसूखदार परिवार के थे। ख्वाजा चिश्ती दरगाह के खादिम चिश्ती परिवार का नाम भी इस कांड से जुड़ा। पुलिस ने नफीस चिश्ती, फारूक चिश्ती और अनवर चिश्ती को आरोपी बनाया। फारुख चिश्ती अजमेर युवा कांग्रेस का अध्यक्ष था तो नफीस चिश्ती उपाध्यक्ष था। इनके अलावा अनवर, मोइजुल्ला उर्फ पुत्तन, इशरत अली, सलीम, शमसुद्दीन, सुहैल वगैरह 18 आरोपी पुलिस की चार्जशीट में नामजद थे।

अजमेर गैंगरेप या ब्लैकमेल कांड न केवल राजनैतिक दलों बल्कि प्रशासन, पुलिस व्यवस्था और न्याय प्रणाली पर भी कई प्रश्न खड़े करता है। अप्रैल 1992 में लोगों की जानकारी में आए इस जघन्य और घोर घिनौने कांड से संबंधित मामला सेशन कोर्ट, फास्ट ट्रैक, पॉक्सो कोर्ट, हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के बीच फुटबाल बना रहा। 1998 में एक कोर्ट ने आठ दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। राजस्थान हाईकोर्ट ने उनमें से चार को बरी कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने शेष चार अपराधियों की सजा आजीवन से घटाकर 10 वर्ष कर दी। मुख्य आरोपियों में से एक फारूक चिश्ती को दिमागी तौर पर पागल मानकर रिहा कर दिया गया। कई ऐसे भी थे, जिन्हें आज तक पकड़ा नहीं जा सका। जो जेल में थे वो जमानत पर रिहा हो गए। बताते हैं कि फारूक चिश्ती और नफीस चिश्ती आज भी पूरी शान से अजमेर में रहते हैं और भरपूर इज्जत पा रहे हैं। दोनों बहुधा दरगाह शरीफ जाते हैं जहाँ ख्वाजा के दीवाने आदर के साथ उनका हाथ चूमते दिख जाएंगे।

इस अजमेर कांड की पूरी कहानी आगामी 14 जुलाई को रिलीज होने वाली फिल्म 'अजमेर-92' में दिखाई जाने वाली है। घटना के अधिकांश दोषी/आरोपी मुस्लिम समुदाय से थे। चिश्ती परिवार अजमेर दरगाह का खादिम परिवार है। पीड़ित लड़कियां सभी हिंदू थीं। इस मामले में अजमेर से प्रकाशित समाचार पत्र 'दैनिक नवज्योति' की भूमिका सराहनीय रही। एक पत्रकार मदन सिंह को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

अजमेर दरगाह कमेटी और कई मुस्लिम संगठन फिल्म 'अजमेर-92' के विरोध में उतर आए हैं। उन्होंने फिल्म पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है तथा कहा है कि इस फिल्म के माध्यम से हिंदू-मुस्लिमों में नफरत फैलाने की मंशा है।

प्रश्न यह खड़ा होता है कि इन संगठनों ने पहले तो इस घिनौने कांड को दबाने का भरपूर प्रयास किया और अब जब सत्य सामने आ रहा है तो विरोध कर रहे हैं। अच्छा तो यह होता कि दरगाह कमेटी और खादिमों की संस्था, खादिम परिवार के बिगड़ैल दरिंदों के कृत्यों पर शर्मिंदगी प्रकट करते हुए क्षमा याचना करती तथा कहती कि हम इस मामले में हिंदू समाज के साथ खड़े हैं। •

-रामस्वरूप अग्रवाल

निष्पक्ष व न्यायसंगत शासन का प्रतीक - सेंगोल

भारत के नवनिर्मित संसद भवन में लोकसभा अध्यक्ष के आसन के पास स्थापित 'सेंगोल' की चर्चा मीडिया में खूब हुई है, पक्ष में भी, विरोध में भी। आइए, संक्षेप में समझें कि क्या है 'सेंगोल' और क्या है इसकी प्रासंगिकता।

प्राचीन समय में राजा या शासक को यह अहसास कराने के लिए कि वह 'निरंकुश' नहीं है, उसके ऊपर धर्म (अर्थात् न्याय और कर्तव्य) का अंकुश रहेगा, एक परम्परा का पालन किया जाता था। जब भी शासक का शपथग्रहण या राज्यारोहण होता था तो शासक हाथ में 'राजदण्ड' लेकर बैठते समय कहता था- 'अदण्डयोस्मि'(मैं अदण्ड्य हूँ अर्थात् मुझे दण्डित नहीं किया जा सकता) तब राजगुरु या कोई संन्यासी उसे एक छड़ी छुआ कर कहते थे -'धर्म दण्ड्योऽसि (धर्म तुम्हें दण्ड दे सकता है) यह परम्परा एक प्रकार से राजा या शासक को स्मरण कराती थी कि उसे न्याययुक्त रहते हुए प्रजा के कल्याण हेतु राज चलाना है। इस परम्परा में राजा के हाथ में रहने वाला राजदण्ड न्याय का प्रतीक माना जाता था। 'सेंगोल' उसी प्रकार का राजदण्ड है।

दक्षिण भारत के महान 'चोल साम्राज्य' में सत्ता हस्तांतरण के समय इसी राजदण्ड सेंगोल को नए शासक को सौंपा जाता था, सेंगोल प्रतीक था- सत्ता हस्तांतरण का और न्याययुक्त शासन का। तमिलनाडु के तंजावुर स्थित तमिल विश्वविद्यालय में पुरातत्व के प्रोफेसर एस राजावेलु बताते हैं कि तमिल में 'सेंगोल'का अर्थ है 'न्याय'। तमिल राजाओं के पास ये संगोल होते थे जिसे अच्छे शासन का प्रतीक माना जाता था। भारत के गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि सेंगोल निष्पक्ष व न्यायसंगत शासन के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है।

सेंगोल में सबसे ऊपर एक वृषभ (बैल) है। महाकाव्य कामायनी के आनन्द सर्ग में जयशंकर प्रसाद जी ने वृषभ को धर्म का प्रतिनिधि कहा था। वृषभ शक्ति और स्थायित्व का प्रतीक है। वह गणतंत्र का प्रतीक भी है।

राजगोपालाचारी ने दिया था सुझाव

भारत के आखिरी अंग्रेज वायसराय माउंटबेटन ने नेहरू से पूछा था कि भारत की बागडोर ब्रिटिश से लेकर भारत को कैसे सौंपी जाएगी? नेहरू ने राजाजी यानि चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के सामने सवाल दोहराया। 'द प्रिंट' की रिपोर्ट के अनुसार राजा जी ने कहा कि सदियों पहले दक्षिण भारत की चेरा, चोल और पांड्य वंशों में सत्ता का हस्तांतरण जिस प्रकार किया जाता था वैसे ही अंग्रेजों से भारत को सत्ता सौंपी जानी चाहिए। राजाजी ने कहा कि चोल साम्राज्य में इस परंपरा का पालन किया जाता था।

राजाजी का सुझाव मान लिया गया और उन्हें पूरी व्यवस्था करने की जिम्मेदारी दी गई। राजाजी पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। भारत की स्वाधीनता का प्रतीक चिह्न बनवाना कोई सहज कार्य नहीं था। राजाजी थिरुवावदुथुरई अधीनम मठ के मठाधीश के पास पहुंचे। मठाधीश ने वुम्मिदी बंगारू ज्वैलर्स को राजदंड बनाने का काम सौंपा।

नेहरू को कैसे सौंपा गया सेंगोल?

कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, एक पुरोहित ने पहले माउंटबेटन को सेंगोल दिया और फिर वापस ले लिया। इसके बाद इस पर गंगाजल छिड़का गया और पंडित नेहरू को सौंपा गया। इस समारोह का आयोजन मध्य रात्रि से पहले हुआ और इसके बाद 15 अगस्त को भारत एक आजाद देश बना। ये भी कहा जाता है कि पंडित नेहरू के सेंगोल स्वीकार करने के अवसर पर एक विशेष गीत भी गाया था। तमिल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एस राजावेलु के अनुसार शैव मठ थिरुवावदुथुरई अधीनम के मुख्य पुरोहित ने ही पंडित नेहरू को सेंगोल दिया था।

बाद में इस 'सेंगोल' को वर्तमान प्रयागराज (पुराने इलाहाबाद) के आनन्द भवन म्यूजियम में नेहरू द्वारा उपयोग में लाई गई वस्तुओं के साथ रख दिया गया। कहते हैं कि नेहरू को हिंदू परंपराओं से अरूचि थी। • (राम)

विकृत विमर्श को ध्वस्त करता सेंगोल

■ बलवीर पुंज

कांग्रेस ने जहां सेंगोल (राजदंड) के पीछे के इतिहास को 'व्हाट्सएप विश्वविद्यालय' से जनित बताकर इसे 'फर्जी', तो राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने वैदिक मंत्रों के साथ राजदंड की स्थापना को 'देश को पीछे धकेलने वाला' बता दिया। वामपंथियों ने सेंगोल को 'मध्यकालीन सामंतवादी व्यवस्था', तो समाजवादी पार्टी ने इसे 'ब्राह्मणवादी आधिपत्य' का प्रतीक कह दिया। इस बौखलाहट के मुख्य दो कारण हैं। एक तो, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति अधिकतर विरोधी दलों की घृणा और दूसरा, सत्ता-हस्तांतरण हेतु 'सेंगोल' की महती भूमिका और उसका गौरवशाली इतिहास है। 'सेंगोल' आधारित विमर्श समाज में मिथकों पर आधारित कई वैचारिक अधिष्ठानों को ध्वस्त करता है।

अंग्रेजों ने बनाए दूषित नैरेटिव

ब्रितानियों ने भारत में अपने राज को शाश्वत बनाने हेतु कई कमजोर कड़ियों पर काम करते हुए विभाजनकारी नैरेटिव स्थापित किए थे। इसी में फर्जी 'आर्य आक्रमण सिद्धांत' के आधार पर 'दक्षिण भारत बनाम उत्तर भारत' और हिंदू समाज को कमजोर करने हेतु 'ब्राह्मण बनाम गैर-ब्राह्मण' का दूषित नैरेटिव भी शामिल था। स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक नेतृत्व को ब्रितानी कुटिलता से छुटकारा पा लेना चाहिए था। परंतु जिन लोगों के कंधों पर राष्ट्र के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी थी, उसका एक बड़ा वर्ग दुर्भाग्य से उसी औपनिवेशिक शिक्षा पद्धति का उत्पाद था। तत्कालीन सरकारों की अनुकंपा से शैक्षणिक आदि महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त वामपंथियों, जिनका वैचारिक उद्देश्य ही भारतीय संस्कृति का समूल नाश करना था और इसके परिणामस्वरूप उन्होंने पाकिस्तान के जन्म में ब्रितानियों और मुस्लिम लीग की सहायता भी की- उन्होंने इन विषैले नैरेटिव्ज् को 'सेकुलरवाद' के नाम पर और अधिक मजबूत बना दिया।

ब्राह्मण नहीं थे छुआछूत के लिए जिम्मेदार

हिंदू समाज अपने मूल सर्वस्पर्शी और समरसपूर्ण ऐकात्मवादी अधिष्ठान को भूलकर अस्पृश्यता जैसी कुप्रथाओं का शिकार हो गया था। इसके परिमार्जन हेतु समाज के भीतर कई आंदोलन चलाए गए। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर के अनुसार छुआछूत के लिए ब्राह्मण जिम्मेदार नहीं थे। परंतु फिर भी इन सामाजिक कुरीतियों को बढ़ावा देने का आरोप ब्राह्मणों पर ही लगाया गया। यह स्थिति तब है, जब इस्लामी व्यवस्था में अनुसूचित समाज भी शेष गैर-मुस्लिमों की भांति अंततोगत्वा 'काफिर' ही है। विभाजन के बाद पाकिस्तान जाकर मंत्री बने और त्यागपत्र देकर पुन:भारत लौटे जोगेंद्रनाथ मंडल की हृदय विदारक चिट्ठी इसका प्रमाण है।

17 अगस्त, 1947 को प्रकाशित तेलुगु भाषा के समाचार पत्र 'आंध्र पत्रिका' में सेंगोल के संबंध में छपा समाचार (अनुवाद : स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तिरुवदुथुराई मठ के प्रमुख परम पावन श्री अंबावन बंडारा सन्नधा ने श्री जवाहरलाल नेहरू को स्वर्ण राजदंड सौंपा।)

चर्च का ब्राह्मण विरोधी अभियान

वास्तव में, ब्राह्मण विरोधी प्रपंच का लक्ष्य हिंदू समाज के मेरुदंड को ध्वस्त करना है। यह वैरभाव केवल सवर्णों के विरुद्ध ही नहीं, अपितु समस्त हिंदुओं के विरुद्ध भी है। इसकी जड़ें 'जेसुइट मिशनरी' फ्रांसिस ज़ेवियर के 16वीं शताब्दी में भारत आगमन में भी मिलती है। तब ब्राह्मण ही हिंदू समाज में चर्च प्रेरित मतांतरण अभियान में सबसे बड़े बाधक थे। इसका प्रमाण ज़ेवियर द्वारा 31 दिसंबर, 1543 को रोम के तत्कालीन शासक को लिखे पत्र में मिलता है, जिसमें उसने कहा था, ''यदि ब्राह्मण विरोध नहीं करते तो हम वहां सभी (हिंदुओं) को ईसा मसीह के शरण में ले आते।''

तत्कालीन चर्च-ब्रितानी संयोजन से कालांतर में 'द्रविड़ आंदोलन' का उदय हुआ, जिसने ब्राह्मण विरोधी उपक्रम को स्वतंत्रता पूर्व भारत-विरोधी और फिर विशुद्ध हिंदू-विरोधी बना दिया। परंतु 'सेंगोल' घटनाक्रम ने इस नैरेटिव को एकाएक ध्वस्त कर दिया।

गैर-ब्राह्मण जातियों का महत्व

'सेंगोल' का संबंध चोल साम्राज्य से रहा है। प्रत्येक चोल शासक द्वारा अपने उत्तराधिकारी को 'सेंगोल' सौंपना, सत्ता-हस्तांतरण का शक्तिशाली प्रतीक था। इस प्रक्रिया को संपन्न कराने का दायित्व भगवान शिव के परमभक्त गैर-ब्राह्मण अधीनमों (मठों) पर रहा। 14 अगस्त, 1947 में जिस थिरुवावदुथुरई अधीनम (मठ) के

आशीर्वाद से ब्रितानियों से भारत को सत्ता-हस्तांतरण का संस्कार कराया था, वह मठ 16वीं शताब्दी से सेवारत है। गत 28 मई को नए संसद भवन में 'सेंगोल' की विधिवत स्थापना हेतु तमिलनाडु से जिन अधीनम् संतों को आमंत्रित किया गया था, वे सभी शिवभक्त गैर-ब्राह्मण हैं। इस परंपरा से स्थापित होता है कि हिंदू संस्कृति के केंद्र में ब्राह्मणों के अतिरिक्त अन्य जातियों की भी बराबरी की हिस्सेदारी थी और है।

बौखलाहट स्वाभाविक थी

स्पष्ट है कि भारत में जिनके राजनीतिक विमर्श में हिंदुओं को जातियों के नाम पर बांटना और ब्राह्मणों का दानवीकरण करना है, उनके लिए 'सेंगोल' की अमृतकाल यात्रा और वर्ष 1947 में तत्कालीन दिल्ली शासन द्वारा अनुष्ठान के लिए तमिलनाडु में गैर-ब्राह्मण अधीनम से सामाजिक-सांस्कृतिक सत्यापन लेना- उनके विषैले एजेंडे के बिल्कुल भी अनुकूल नहीं। ऐसे में उनकी बौखलाहट स्वाभाविक प्रतीत होती है।

नए संसद भवन में स्थापित 'सेंगोल' को स्वतंत्र भारत ने भले ही भुला दिया था, परंतु 1947 में तत्कालीन राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय समाचारपत्रों-पत्रिकाओं, कई पुस्तकों और थिरुवावदुथुरई अधीनम के अभिलेखों में स्पष्ट रूप से अंकित है। अब जो समूह अक्सर कुतर्क करते हुए भारत को 'एक राष्ट्र' मानने से इनकार करता है और इसके लिए' तमिल/कन्नड़ बनाम संस्कृत/हिंदी' और 'दक्षिण बनाम उत्तर भारत' को आधार भी बनाता है, उस नैरेटिव को भी 'सेंगोल' ने जमींदोज कर दिया है।

'सेंगोल' भारतीय संस्कृति का प्रतिरुप

नए संसद भवन में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पवित्र 'सेंगोल' की स्थापना मजहबी नहीं, अपितु अनादिकाल से चली आ रही लोकतांत्रिक, बहुलतावादी और पंथनिरपेक्षी भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप है। सेंगोल उसी भावना का विस्तार है, जिसके अंतर्गत संविधान की हस्तलिखित मूल प्रतियों में रामायण, महाभारत आदि वैदिक परंपरा के चित्र बनाए गए थे। 'सेंगोल' दर्शाता है कि शासक, विधि-नियम के अधीन है, तो जनसेवा उसका एकमात्र धर्म। युगों-युगों से भारत 'धर्म'-प्रधान रहा है। यहां धर्म का अर्थ 'मजहब' (रिलीजन) से नहीं है। भारतीय संस्कृति में 'धर्म' अति व्यापक और उदार है। इसका आलोक 'सहिष्णु' या 'सहनशील' नहीं, अपितु वह विशाल मनोभाव है, जहां मतभिन्नता को स्वीकार्यता मिलती है। भगवान गौतम बुद्ध और सिख पंथ के संस्थापक गुरु नानकदेव साहिब को भारतीय समाज में मिली स्वीकार्यता इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है।

एकेश्वर बनाम बहुलतावादी दर्शन

स्वतंत्र भारत में वैदिक अनुष्ठान से किसी भी राजकीय कार्यक्रम का संचालन 'सेकुलर मूल्यों का अपमान' नहीं, अपितु समरस और मानवीय बहुलतावादी दर्शन की अभिव्यक्ति है। सदियों पहले जब पारसी, यहूदी, सीरियाई ईसाई अपने उद्गमस्थान पर मजहबी प्रताड़ना का शिकार होकर भारत में शरण लेने आए, तब उनका स्थानीय हिंदू शासकों और समाज द्वारा स्वागत किया गया, बल्कि उन्हें उनकी पूजा-पद्धति का अनुसरण करने की सुविधा भी दी। यही नहीं, भारत में पैगंबर साहब के जीवनकाल में अरब के बाहर विश्व की पहली मस्जिद- 'चेरामन जुमा मस्जिद' का निर्माण भी वर्ष 629 में तत्कालीन केरल के हिंदू राजा चेरामन पेरुमल भास्कर रवि वर्मा ने कोडुंगल्लूर में करवाया था। यह इसलिए संभव हुआ, क्योंकि समावेशी वैदिक दर्शन न तो 'काफिर-कुफ्र' और 'हीथन/पेगन' अवधारणा जैसा असहिष्णु है और ना ही अनीश्वरवादी वामपंथ जैसा संकुचित। विगत सहस्राब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के जिन क्षेत्रों में मजहबी 'एकेश्वरवाद' का कब्जा हुआ, वहां स्थानीय हिंदू-बौद्ध-सिख-जैन अनुयायी नगण्य हो गए और बहुलतावाद-लोकतंत्र रूपी जीवनमूल्यों का ह्रास हो गया। पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और शेष खंडित भारत में कश्मीर- इसका प्रमाण है।

सच तो यह है कि नये संसद भवन में 'सेंगोल' के अनुष्ठान का विरोध और आलोचना उसी मानसिकता का विस्तार है, जो प्रभु श्रीराम के व्यक्तित्व और उनके समय बने रामसेतु को काल्पनिक, तो भारत को सनातन राष्ट्र नहीं, अपितु अलग-अलग राज्यों का समूह मात्र मानता है। ■ *(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार और पूर्व राज्यसभा सांसद हैं)*

जन्म दिवस : 6 जुलाई

श्यामाप्रसाद मुखर्जी

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाना चाहते थे। उस समय जम्मू-कश्मीर का अलग झण्डा और अलग संविधान था। वहां का मुख्यमन्त्री वजीरे-आज़म यानी प्रधानमंत्री कहलाता था। संसद में दिए गए अपने एक संबोधन में डॉ. मुखर्जी ने धारा-370 को समाप्त करने की भी जोरदार वकालत की। कश्मीर के मामले में मुखर्जी ने पं.नेहरू पर तुष्टिकरण का आरोप लगाते हुए कहा था कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे। कलकत्ता में जन्मे डॉ. मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे व शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे। 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। इस पद पर नियुक्ति पाने वाले वे सबसे कम आयु के कुलपति थे। वे सावरकर के राष्ट्रवाद के प्रति आकर्षित हुए और हिन्दू महासभा में शामिल हो गए।

गांधी जी और सरदार पटेल के अनुरोध पर वे भारत के पहले मंत्रिमण्डल में शामिल हुए। उन्हें उद्योग जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। किन्तु राष्ट्रवादी चिन्तन के चलते नेहरू जी के साथ उनके मतभेद बने रहे। राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उन्होंने मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने एक नई पार्टी 'जनसंघ' बनाई जो आज की भारतीय जनता पार्टी है। कश्मीर प्रवेश के लिए अनुमति लेने के नियम को चुनौती देने के लिए वे मई 1953 में बिना अनुमति लिए जम्मू-कश्मीर की यात्रा पर निकल पड़े। वहां पहुँचते ही उन्हें गिरफ्तार कर नज़रबन्द कर लिया गया। नजरबंदी के दौरान ही 23 जून, 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। वे सच्चे राष्ट्रवादी थे। 'देश पहले आता है'- ये शब्द उनके द्वारा बोले गए थे। (हेमा)

मंदिरों में तोड़–फोड़ : सहिष्णुता को कट्टरपंथ की चुनौती

■ हेमलता चतुर्वेदी

भारत देश पंथनिरपेक्ष है। यह कथन धीरे–धीरे अतिसंवेदनशील होता जा रहा है। इसके बहुत से कारण और आयाम हो सकते हैं। परन्तु आज जिस एक मुद्दे पर यह कथन चर्चा में आया, वह है पंथनिरपेक्ष राष्ट्र में अचानक हिन्दू आस्था स्थलों पर आक्रमण। मूर्तियों का तोड़ना, दानपेटी लूटना।

ताजा मामला उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर का है। हालांकि, मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है और जांच जारी है। हुआ यह है कि रात के अंधेरे में एक साथ चार मंदिरों में कुछ जिहादी युवकों ने मूर्तियां तोड़ कर क्षेत्र में सनसनी फैला दी। तीस साल पहले जब बाबरी ढांचा टूटा तो देश भर में कितना हंगामा हुआ। दंगे हो गए। फिर मंदिरों में तोड़–फोड़ की घटना इतनी सहजता से कैसे स्वीकार कर ली जाए? क्या पंथनिरपेक्ष राष्ट्र में केवल हिंदुओं से ही अपेक्षा है कि वे सहिष्णुता रखें।

बुलंदशहर मामले में भी आशंका जताई जा रही है कि उत्पातियों ने यह घटना संभवत: दंगे भड़काने के लिए अंजाम दी हो। जब एक साथ एक देश में रहने के लिए विभिन्न धर्मावलम्बी ऐसे षड्यंत्र करें तो इसका अर्थ क्या है? जो बहुसंख्यक हैं और उदारवादी मानसिकता रखते हैं, उन्हें कट्टरपंथी यूं ही निशाना बनाते रहें? समय आ गया है कि उदारवादी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाएं। ऐसा हो भी रहा है। बुलंदशहर में भी घटना के विरोध में हिन्दूवादी समूहों में आक्रोश देखा गया।

मंदिरों में तोड़-फोड़ की हालिया घटनाओं की सूची लम्बी है। 31 मई को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर की घटना के बाद, 4 जून को छत्तीसगढ़ के बेमेतरा सिटी के छीतापार गांव में सातबहनिया मंदिर में देवी की प्रतिमाएं तोड़ कर तालाब में बहा दी गईं। इससे पूर्व इसी साल 4 अप्रेल को आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में एक हिन्दू मंदिर में तोड़–फोड़ कर विनायक की मूर्ति के टुकड़े–टुकड़े कर दिए। इसके बाद क्षेत्र में तनाव रहा। इससे पूर्व फरवरी माह में राजस्थान के राजसमंद में हनुमान जी की प्रतिमा तोड़ दी गई।

गत वर्ष अक्टूबर में अलवर के भिवाड़ी में गोवर्धन पूजा के दिन एक मंदिर में तोड़–फोड़ की गई। उस समय मंदिर में कई दलित बंधु पूजा के लिए प्रसाद तैयार कर रहे थे, तभी कुछ मुस्लिम युवकों ने मंदिर में घुसकर तोड़–फोड़ की व प्रसाद जमीन पर फेंक दिया। सवाल उठता है कि कट्टरपंथियों की हठधर्मिता के सामने सहिष्णुता की हद कितनी रखी जाए? गत वर्ष ही जुलाई में उदयपुर के वैष्णो देवी मंदिर में चोरी व तोड़–फोड़ कर माहौल खराब किया गया। अलवर मंदिर विध्वंस मामले में हालांकि कांग्रेस महासचिव ने कहा कि राज्य सरकार पुन: यहीं मंदिर बनवाएगी।

ताजा घटना राजस्थान के ही लालसोट की है। यहां भी तथाकथित अज्ञात लोगों ने रात्रि में चतुर्भुज मंदिर की प्रतिमा को तोड़ा। टूटी हुई प्रतिमा मंदिर के पास पड़ी मिली।

प्रशासन की जिम्मेदारी मंदिर पुनर्निर्माण से ही पूरी नहीं हो जाती। भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकना भी जरूरी है। अगर मौजूदा कानून में ऐसी वारदातों के लिए कड़ी कार्रवाई का प्रावधान नहीं है तो नए कानून बनाये जाएं ताकि सजा के डर से ही सही, कट्टरपंथियों के कारनामों पर लगाम तो लगे। अन्यथा पंथनिरपेक्षता पर खतरा मंडराता रहेगा। जरूरत है कि तुष्टिकरण की नीति बंद हो और सभी मतावलम्बी अपने मत की रक्षा व दूसरे मत-पंथ का सम्मान करें। ■

मालपुरा (टोंक)

धार्मिक स्थल को हानि पहुँचाने की झूठी सूचना पर जिहादी भीड़ ने गुर्जर मोहल्ले पर किया था पथराव

कुछ दिनों पूर्व मालपुरा के गुर्जर मौहल्ले में जिहादी उपद्रवियों ने जमकर पथराव करते हुए घरों में घुसकर जानलेवा हमला व मारपीट की थी। जिसमें तकरीबन डेढ़ दर्जन से अधिक महिला-पुरूष घायल हो गये थे। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नौंवे आरोपी युवक सोहेल पुत्र आशिक अली घड़ीवाला निवासी गांधी पार्क को गिरफ्तार किया। थानाधिकारी भूराराम खिलेरी ने बताया कि तेज रफ्तार से मौहल्ले में बाइक दौड़ाने पर रोकटोक करने के कारण शरारती तत्वों द्वारा सोशल मीडिया पर धार्मिक स्थल को हानि पहुँचाने की अफवाह वायरल कर लोगों को उकसाया गया था।

जयपुर

बिछड़े बच्चों को मिलाया मां-बाप से

निराश्रित व परित्यक्त बच्चों के लिए कार्यरत सुरमन संस्थान ने मालेर कोटला (पंजाब) के रहने वाले दो बच्चों को उनके माता-पिता से मिलवाया। संस्थान की सचिव श्रीमती मनन चतुर्वेदी ने बताया कि इससे पहले भी वे हजारों बच्चों को उनके परिवारों से मिलवा चुकी हैं।

राजस्थान के तीन हजार से ज्यादा युवाओं ने प्राप्त किया संघ कार्य का प्रशिक्षण

विश्व के सबसे बड़े वैचारिक एवं स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य विस्तार का एक बड़ा आधार प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगाए जाने वाले शिक्षा वर्गों को माना जाता है।

इन शिक्षा वर्गों में संघ के सभी आयु के कार्यकर्ताओं, विशेषकर युवा वर्ग को संघ की रीति-नीति, विचार, कार्यप्रणाली से परिचित कराने के साथ ही भारत के गौरवशाली इतिहास, प्रात: स्मरणीय महापुरूषों, वीरांगनाओं आदि की जानकारी देते हुए उन कारणों पर भी चर्चा की जाती है जिनके कारण श्रेष्ठ ज्ञान-विज्ञान, अपार धन-संपदा और बलशाली होने के बावजूद विदेशी भारत आक्रांताओं का गुलाम बना।

संघ ने व्यवस्था की दृष्टि से देश भर को 43 प्रांतों में विभाजित कर रखा है। राजस्थान क्षेत्र को भी इसी क्रम में तीन प्रांतों में विभाजित किया हुआ है- जयपुर, चित्तौड़ और जोधपुर प्रांत। पहले कोई समय था कि संपूर्ण राजस्थान का प्रथम व द्वितीय वर्ष का एक-एक शिक्षा वर्ग लगाया जाता था। आज संघ कार्य के विस्तार को देखते हुए प्रत्येक प्रांत में कई-कई शिक्षा वर्ग लगते हैं।

इस वर्ष तीनों प्रांतों में 4-4 स्थानों पर यानि कुल 12 स्थानों पर प्रथम वर्ष के तथा द्वितीय वर्ष के दो स्थानों पर शिक्षा वर्ग लगाए गए थे, जिनमें कुल 3 हजार 41 कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तृतीय वर्ष का शिक्षा वर्ग नागपुर में लगाया जाता है जहां संपूर्ण भारत से चयनित हुए कार्यकर्ता प्रशिक्षण लेने पहुँचते हैं।

प्रथम वर्ष

जयपुर प्रांत		जोधपुर प्रांत		चित्तौड़ प्रांत	
निवाई	262	जैसलमेर	95	राजसमंद	91
जयपुर (विशेष)	253	तिंवरी	255	केकड़ी	279
सीकर	308	सिरोही (विशेष)	436	भीलवाड़ा	142
जामडोली (घोष)	163	सिरोही (घोष)	146	झालावाड़ (घोष)	141
कुल	**986**	**कुल**	**932**	**कुल**	**653**

द्वितीय वर्ष		तृतीय वर्ष (नागपुर)	
हिण्डौन सिटी	252	जयपुर प्रांत से	**23**
उदयपुर (विशेष)	218	जोधपुर प्रांत से	**25**
		चित्तौड़ प्रांत से	**32**
कुल	**470**	**कुल**	**80**

तेज बारिश भी नहीं रोक पाई सेविकाओं का पथ संचलन

मातृशक्ति में शारीरिक व बौद्धिक क्षमताओं का विकास तथा समाज व राष्ट्रसेवा की प्रेरणा का संचार निरंतर हो, इस हेतु आयोजित राष्ट्र सेविका समिति के वर्गों (प्रवेश व प्रबोध) का समापन बीते दिनों हुआ। जोधपुर में प्रबोध वर्ग के समापन से पूर्व सेविकाओं ने वैदिक मंत्रों के साथ योगासन, दंड, यष्टि, नियुद्ध, योगचाप का सामूहिक प्रदर्शन घोष की रचनाओं पर किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय की न्यायाधीश डॉ.नुपूर भाटी ने सेविकाओं को जीवन में न्यायप्रिय बनकर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि हमें जागृत रहकर परिवार, समाज और राष्ट्र का रक्षण और संरक्षण करना है तथा अपनी संस्कृति को बचाकर रखना है।

कार्यक्रम में समिति की अ.भा.बौद्धिक प्रमुख डॉ. शरद रेणु, एम्स में सेवारत डॉ. पंकजा राघव और जेएनवीयू में वनस्पति विज्ञान की विभागाध्यक्ष डॉ.सुनीता अरोड़ा भी उपस्थित थीं। जानकारी हो कि समिति के प्रांत रचनानुसार लगे प्रवेश वर्ग में कुल 319 तथा राजस्थान क्षेत्र को मिलाकर जोधपुर में लगे प्रबोध वर्ग में 29 सेविकाओं ने 15 दिन घर से दूर रहकर संगठन व समाज हेतु कार्य करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समिति का प्रवीण वर्ग प्रतिवर्ष नागपुर में लगता है।

दुर्गावाहिनी का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग : विश्व हिंदू परिषद् की महिला शाखा 'दुर्गावाहिनी' द्वारा आयोजित वर्ग में 15 से 35 वर्ष की 300 से अधिक युवतियों ने शस्त्र-शास्त्र का ज्ञान, अनुशासन, वर्तमान चुनौतियों से कैसे सामना किया जाए तथा आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। जयपुर में लगे इस सात दिवसीय वर्ग का समापन बीती 30 मई को हुआ। समापन कार्यक्रम से पूर्व मातृशक्ति ने कदम से कदम मिलाकर संचलन निकाला।

इसरो प्रमुख ने कहा-

विज्ञान के सिद्धांतों की खोज हमारे वेदों की देन

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कहा है कि विज्ञान का मूल वेद हैं। अरब के रास्ते यह ज्ञान पश्चिमी देशों तक पहुंचा और वहां के वैज्ञानिकों ने इसे अपने नाम से खोज कर प्रचारित किया। उन्होंने कहा कि बीजगणित, समय की गणना, वास्तुकला, ब्रह्मांड की संरचना, धातु विज्ञान, स्क्वायर रूट के साथ-साथ एविएशन (वैमानिकी)की जानकारी के प्रमाण भी वेदों में मिलते हैं।

श्री सोमनाथ बीती 24 मई को उज्जैन में महर्षि पाणिनि संस्कृत और वैदिक विश्वविद्यालय में दीक्षांत सामारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा नियम आधारित वाक्य-विन्यास पर आधारित है इसीलिए यह कम्प्यूटर भाषा के अनुकूल है। हालांकि अभी इसके प्रयोग को लेकर शोध कार्य चल रहा है।

श्री सोमनाथ का कहना था गणित, चिकित्सा, तत्त्व मीमांसा, खगोल विज्ञान आदि संस्कृत में लिखे गए हैं। शून्य जैसी अवधारणाओं की खोज हमारे ही ऋषि वैज्ञानिकों द्वारा की गई थी, जबकि रेखागणित के पाइथोगोरस प्रमेय का वर्णन काव्यात्मक शैली में व्यक्त किया गया है।

भारतीय वैज्ञानिकों को यह सारा ज्ञान संस्कृत भाषा में था और तब यह भाषा लिखी नहीं जाती थी, बल्कि लोग एक-दूसरे से सुनकर उसे कंठस्थ कर लेते थे। हालांकि बाद में संस्कृत के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाने लगा था। उन्होंने कहा कि हजारों साल पहले भारतीय वैज्ञानिकों ने एस्ट्रोनॉमी, मेडिसिन, फिजिक्स, एरोनॉटिक्स साइंस जैसे विषयों पर संस्कृत में लिखा जिसको पूरी तरह से ना तो हमने काम में लिया है और ना ही उस पर शोध हुआ है।

सूर्य सिद्धांत का उल्लेख

खगोल विज्ञान पर लिखी गई 8 वीं शताब्दी की पुस्तक का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत में लिखित पहली पुस्तक को देखकर मैं आश्चर्यचकित हूँ कि कैसे सौर प्रणाली, समय के पैमाने और पृथ्वी के आकार और परिधि के बारे में प्राचीन समय में ही हमारे वैज्ञानिक ऋषियों ने बता दिया था। पुस्तक में ग्रह सूर्य के चारों और कैसे घूमते हैं, इसका भी विस्तृत वर्णन किया गया है।

उत्तर: जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं - 1.युयुत्सु 2. इंडोनेशिया 3.हरिद्वार 4.सिरध्वज 5.श्री गुरुग्रंथ साहिब 6. आचार्य विष्णुगुप्त 'चाणक्य' 7.अगस्त्य संहिता 8.रामगढ़ 9.चंदन 10. विजय सिंह पथिक

बालासोर रेल दुर्घटना

देवदूत बने संघ के स्वयंसेवक

ओडिशा के बालासोर में 4 जून को हुई भीषण रेल दुर्घटना के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने राहत और बचाव कार्य किया। स्वयंसेवकों ने लगभग 500 यूनिट रक्तदान भी किया। हमेशा की तरह संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले घटना स्थल पर पहुंचे। दुर्घटना स्थल के पास स्थित बाहनगा गांव में संघ की शाखा लगती है, जानकारी मिलते ही गांव के स्वयंसेवक वहां पहुंच गए। जैसे-जैसे अन्य स्थानों पर सूचना पहुंची, वहां के भी स्वयंसेवक घटनास्थल पर पहुंचने शुरू हो गये। रात तक लगभग ढाई सौ स्वयंसेवक दुर्घटना स्थल पर पहुंच चुके थे और प्रशासन व राहत कार्यों में लगे जवानों की सहायता कर रहे थे। राहत बचाव में देरी ना हो, इसके लिए स्वयंसेवकों ने तत्काल प्रभाव से ऑटो व मोटरसाइकिलों से घायलों को अस्पताल ले जाना शुरू कर दिया। कुछ स्वयंसेवक विपरीत परिस्थितियों में बोगी के अंदर जा-जा कर पूरी रात घायलों को निकालते रहे और अन्य स्वयंसेवक उन घायलों को अस्पताल पहुंचाते रहे।

बालासोर जिला अस्पताल में संघ पदाधिकारी उपस्थित थे और लगातार सेवा कार्यों की निगरानी कर रहे थे। यहां पर लगभग 300 स्वयंसेवकों ने रक्तदान किया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, हिंदू जागरण मंच, बजरंग दल व सेवा भारती के सैकड़ों कार्यकर्ता भी बचाव कार्यों में अनवरत लगे रहे।

श्री अश्विनी वैष्णव संभवत: स्वाधीन भारत के ऐसे पहले रेल मंत्री हैं जो बालासोर रेल दुर्घटना पर मात्र वक्तव्य देने के बजाय घटनास्थल पर तुरंत गए तथा दुर्घटना की छानबीन करने,मृतकों को उनके परिवार को सौंपने,घायलों के उपचार आदि में लगातार सक्रिय रहते हुए दुर्घटना स्थल पर तब तक रहे जब तक कि यातायात सामान्य नहीं हो गया।

'भगवान' शब्द में समाई है समूची प्रकृति

भारतीय संस्कृति में दिया गया प्रकृति को पूर्ण सम्मान

■ बृजेश विजयवर्गीय,
-समन्वयक, चम्बल संसद

पर्यावरण एक दिन का विषय नहीं है कि उत्सव मना कर पुन: बेपरवाह हो जाएं। भारतीय संदर्भ में पंच महाभूतों को पर्यावरण के रूप में समझ सकते है। 'भगवान' को किसी ने देखा या नहीं लेकिन भ यानी भूमि, ग- गगन, व- वायु, अ- अग्नि और न- नीर। समूची प्रकृति ही भगवान के रूप में है। अध्यात्म और विज्ञान इसकी पुष्टि करते हैं। इसीलिए सनातन संस्कृति में भूमि, गगन, वायु, अग्नि और जल को देवता मान कर पूजा जाता है।

हमारे यहां पीपल, पारस पीपल, रूद्राक्ष आदि वनस्पतियों को उत्सव-दिवस पर देवी-देवता के रूप में पूजा जाता है। लगभग सभी देवताओं के सान्निध्य में कोई न कोई वन्यजीव या पशु-पक्षी, नदियां, समुद्र, सरोवर पर्वत होते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने तो पहाड़ों, गुफाओं और वृक्षों के नीचे ही साधना की। भगवान के नाम से बोधि वृक्ष को पहचान मिली। अनेक उदाहरण हैं जहां हमारी संस्कृति में प्रकृति को पूर्ण सम्मान दिया गया है।

ज्यों ज्यों सभ्यता का विकास हुआ तो प्रकृति को नुकसान हुआ और उसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। राजस्थान में बनास नदी पानी के लिए नहीं, रेत के लिये जानी जा रही है यानी उपयोग परिवर्तन हो गया। जो अरावली पर्वत रेगिस्तान के विस्तार को रोकने में सहायक रहा, उसे बचाने के लिए आम जन को अदालतों की शरण लेनी पड़ रही है। भारत की लगभग सभी नदियां प्रदूषित हो गईं और सरकार के सारे समाधान विफल हो रहे हैं।

प्रकृति शोषण आधारित शिक्षा पद्धति : पर्यावरण विनाश के कारणों में गहराई से जाएं तो समझ में आता है कि हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति प्रकृति के शोषण पर आधारित है जबकि भारतीय गुरूकुल पद्धति में शिक्षा नहीं विद्या होती थी जहां पर प्रकृति का पोषण होता था। जब शिक्षा ही प्रकृति के शोषण की हो तो कैसे नदियां स्वच्छ रहेंगी और कैसे जंगल बचेंगे तथा पहाड़ क्यों न मैदान बनेंगे और क्यों न सीमेंट कंकरीट के जंगल धरती को लील लेंगे।

पर्यावरण तो प्रदूषित होना ही था! : देश में सभी पर्यावरण संरक्षण के कानूनों के साथ भयंकर खिलवाड़ हो रहा है। राजस्थान और उत्तराखण्ड में तो संतों को पहाड़ व गंगा बचाने के लिए आत्मदाह तक करना पड़ा। अमृता देवी का बलिदान आज शायद बेकार हो गया। सरकारें संवेदना के न्यूनतम स्तर पर हैं। समाज को सुविधाएं छोड़ना ही नहीं है। पॉलीथीन प्रतिबंध के बावजूद हर जगह चल रही है। देश में इक्का-दुक्का स्थानों को छोड़ कर कोई नगर पालिका या नगर निगम कचरे के पहाड़ों को बढ़ने से नहीं रोक सके। नदियां मैला ढोने वाली गाड़ी बन गई हैं। जंगल 33 प्रतिशत चाहिए लेकिन मात्र 4 प्रतिशत ही बचे हैं। कैसे प्रकृति संतुलित रहेगी? पहाड़ दरकेंगे और समुद्र उफनेंगे ही, तापमान झुलसाएगा, तूफान आऐंगे और धरती डोलेगी ही।

कुछ सुझाव :

- समस्त पर्यावरणीय कानूनों की पालना के लिए राजनीतिक इच्छा शक्ति तैयार कर उनके पालना का तंत्र विकसित किया जाए। कचरा प्रथक्कीकरण पर जोर दे कर रिसाइक्लिंग उद्योगों को जिला स्तर तक स्थापित करना होगा।
- स्थानीय शासन को पाबंद किया जाए कि जल स्त्रोतों में गंदे नाले नहीं मिलें।
- वन भूमि को गैर वनीकरण के लिए किसी भी हालत में नहीं दिया जाए। वन भूमि को बेकार न पड़े रहने दें। उस पर कोई न कोई अभयारण्य, सफारी, पार्क या कंजर्वेशन रिजर्व बनाया जाए जिससे कि वन भूमि पर अतिक्रमण न हो सके।
- सेना और पुलिस को शांति काल में पर्यावरणीय सेवाओं में इस्तेमाल किया जाए।
- स्कूलों में पर्यावरणीय शिक्षा को व्यवहारिक बनाएं। अभी सिर्फ औपचारिकता ही हो रही है।
- भवन निर्माण में ग्रीन बिल्डिंग टेक्नोलॉजी को अपनाया जाए।
- शहर और गांवों में हर पेड़ को सरकारी संपत्ति घोषित कर नम्बरिंग की जाए।
- पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर रहे लोगों को सरकारी नौकरी में प्राथमिकता दी जाए। जैसे किसी खिलाड़ी को या मृतककर्मी के आश्रितों को दी जाती है।

कोटा

पेड़ काटने वाले को पकड़कर पुलिस को सौंपा

पेड़ लगाना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है पेड़ को काटने से बचाना। अक्सर सड़क के किनारे या किसी पार्क में लगा कोई पेड़ कटा हुआ मिलता है।

यदि सब लोग ठान लें कि कोई पेड़ काटता मिलेगा तो उसे पकड़कर पुलिस के हवाले करेंगे या कम से कम उसकी सूचना तुरंत पुलिस, प्रशासन एवं पर्यावरण कार्यकर्ता को देंगे तो पेड़ों का कटना बंद हो सकता है। कानून में पेड़ काटना अपराध माना गया है।

कोटा का मामला

कोटा के तलवंडी में बीती 31 मई को जब लोगों ने सायंकाल आजाद पार्क में एक व्यक्ति को पेड़ काटते हुए देखा तो उसे पकड़कर पुलिस के हवाले किया। पुलिस ने उसकी कुल्हाड़ी व दांतली भी जप्त की।

गतांक से आगे....

गौ-आधारित जैविक खेती ही क्यों ? भाग-3

खेती में सूक्ष्म जीवाणुओं की भूमिका

■ **बद्रीनारायण चौधरी**
-राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ

सूक्ष्म एवं अति सूक्ष्म जीवाणु जो केवल सूक्ष्मदर्शी यंत्र से ही देखे जा सकते हैं, मिट्टी में सर्वत्र मौजूद हैं। यदि सायंकाल रास्ते में कोई गाय गोबर करती है और प्रात:काल उस गोबर को उठायेंगे, तो गोबर के नीचे मिट्टी में से कुछ बड़े कीड़े और असंख्य सूक्ष्म जीव गोबर की महक से ही ऊपर आ जाते हैं। ये सभी सूक्ष्मजीव इस सृष्टि में, समस्त वनस्पति जगत, मिट्टी के पोषण, हमारे आहार, वायुमण्डल आदि में सर्वत्र उपलब्ध हैं।

पोषक तत्वों के लिए जीवाणु

वनस्पति के लिए जितने भी पोषक तत्व चाहिए, उन सभी की आपूर्ति के लिए कई बैक्टीरिया (जीवाणु) जिम्मेदार हैं। वनस्पति जगत के पोषण का कार्य जड़ों के माध्यम से करते हैं, इसी प्रक्रिया में इनको भी अपना आहार मिलता रहता है।

इन सभी का पैदा होना-मरना-सक्रिय रहना सभी क्रियाएं मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में सहायक होती है। आवश्यकतानुसार इनकी कॉलोनी का विस्तार भी होता रहता है। नैसर्गिक रूप से कीट नियंत्रण भी चलता रहता है। किसानों को अलग से हानिकारक कीटों को मारने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। पौधों की जड़ों के पास ही जब गोबर-बायोमास-पानी की नमी एवं मल्चिंग एक साथ सभी मौजूद रहने के कारण बैक्टीरिया सक्रिय रहते हैं। सूर्य की गर्मी एवं रोशनी में इनको कठिनाई रहती है, इसलिए फसलों के अवशिष्ट की मल्चिंग करना लाभदायक होता है।

परस्पर सहजीवी एवं पूरकता

जब सूर्य के प्रकाश में क्लोरोफिल प्रक्रिया से, जड़ों द्वारा प्रेषित उष्मा में सभी पोषक तत्व पत्तों को भेजे जाते हैं, उनसे पत्तियाँ खाना (कच्ची शर्करा) बनाती हैं, जो पौधे में सभी फल-फूलों-टहनियों-तनों को जाती हैं, परंतु इस शर्करा का एक भाग नीचे जड़ों तक भी भेजा जाता है (फोमा) जो जीवाणुओं को मिलता है। प्रकृति में यह परस्पर सहजीवी एवं पूरक निर्भरता की सुन्दर व्यवस्था पहले से ही मौजूद है। यदि हम रसायनों का जहर नहीं डालें, ट्रैक्टर जैसे भारी यंत्र खेत में नही घुमाएं तो जीवों के द्वारा संपूर्ण उत्पादन प्रक्रिया का श्रेष्ठ संचालन होता है। वास्तव में यही जैविक कृषि है। पौधे की जड़ों के द्वारा दी जाने वाली शर्करा के कारण जीवाणुओं की कॉलोनीज का तेजी से विस्तार होता है। ऊपरी तल पर इस सक्रियता एवं विशेष गंध के कारण भूमिगत जीव, कीट जो समाधि (डॉरमेसी) की अवस्था में चले जाते हैं, वे भी समाधि त्याग कर, नीचे से कई प्रकार के खनिज लवण आदि लेकर ऊपर आते हैं, वहाँ विष्टा करके अपना योगदान करते हैं। ऐसे केंचुए, माइक्रोराइजा आदि अन्यान्य जीव भी अपना योगदान चालू कर देते हैं।

बैक्टीरिया में प्रत्येक प्रजाति का अलग-अलग कार्य निर्धारित है, जो उसी काम में रत रहते हैं, जैसे वायुमण्डल में उपलब्ध 78% नाइट्रोजन को पकड़कर पौधों की जड़ों को उपलब्ध कराने वाला जीवाणु (नाइट्रोजन फिक्सिंग बैक्टीरिया) हैं, ऐसे ही कोई फास्फोरस फिक्सिंग बैक्टीरिया, पोटेशियम फिक्सिंग बैक्टीरिया आदि सभी पोषक तत्वों के लिए भिन्न-भिन्न प्रजाति के बैक्टीरिया निर्धारित हैं। बहुत सारे पोषक तत्व तो मिट्टी में भी पड़े रहते हैं, किंतु वे पौधों द्वारा जिस स्वरूप में ग्रहण किए जाते हैं, उसी स्वरूप में, घुलनशील रुप में जीवाणु बदलते हैं, तब पौधा ग्रहण कर पाता है, वरना खेत में भरे हुए भी काम के नहीं होते ।

ह्यूमस

भूमि/ खेत में ऊपरी सतह की 4-5 इंच मिट्टी जब पोसरी-मुलायम-फूली हुई सी रहती है और जब पाँव रखेंगे तो हमारा पैर भी 2-3 सेमी. नीचे बैठ जायेगा। ऐसा तब होता है, जब वहां पेड़-पौधों की पत्तियाँ, गोबर खाद, पानी की नमी और जीवाणुओं की सक्रिय कॉलोनियां भी इसमें बहुतायत में पाई जाती है। इन सभी के योगदान से तैयार ऐसी मुलायम मिट्टी को ही ह्यूमस कहा जाता है। जब खेत में ह्यूमस होगी तभी उसमें कार्बन की मात्रा बढ सकेगी, अन्यथा नहीं बढ़ सकती और बिना कार्बन की मौजूदगी के पौधे की जड़ें पोषक तत्वों को ग्रहण नहीं कर सकती। सामान्यतया 5% से अधिक कार्बन मात्रा चाहिए जो जंगलों में तो 10% तक भी मिल जाती है। वर्तमान में हमारे खेतों में इसकी मात्रा 0.2 से 0.5% तक ही उपलब्ध है। स्पष्ट है कि जैविक खेती के लिए कार्बन बहुत जरूरी तत्व है। वह ह्यूमस के कारण ही बढ़ता है और ह्यूमस निर्माण कृषि अपशिष्ट, पशु अपशिष्ट पदार्थों के योगदान से या फिर हरी खाद करके बढ़ाया जा सकता है। बिना ह्यूमस बढ़ाये यानि बिना कार्बन बढ़ाये हम चाहे कितना भी गोबर डाल देवें, पूरा उत्पादन नहीं मिलेगा।

ह्यूमस नष्ट कर दिया

गत कुछ दशकों से रासायनिक खादों, कीटनाशकों एवं खरपतवार नाशकों का प्रयोग करने से खेतों में ह्यूमस नष्ट हो गया, कार्बन समाप्त हो गया। रसायनों का लाभ पौधों को उर्वरक एवं स्प्रे के माध्यम से सीधे ही मिल जाता है, इसलिए उनका प्रयोग चमत्कारिक लगा। परन्तु रसायन प्रयोग की उच्चतम सीमा भी पार हो चुकी है, फलस्वरूप रासायनिक खाद की मात्रा बढ़ा देने पर भी उत्पादन स्थिर या कम ही होने लगा है। कृषि वैज्ञानिकों के भी संज्ञान में आया कि केवल रसायनों के प्रयोग से हर बार उत्पादकता वृद्धि संभव नहीं, और वे भी किसानों को गोबर खाद डालने के लिए सलाह देने लगे हैं। मुख्य बात यह है कि अब तक कृषि अपशिष्ट को जलाने की जो परिपाटी थी, वह गलत थी, बल्कि वह तो एक ऐसा अनिवार्य तत्व है, जिसकी खेत में ह्यूमस/कार्बन बढ़ाने के लिए बहुत बड़ी आवश्यकता है। क्रमश:

कट्टरपंथी इस्लामी संगठन के विरुद्ध की गई कार्रवाई

मतांतरण व लव जिहाद की बढ़ रही हैं घटनाएं

■ मनोज गर्ग

देश इस समय इस्लामिक चरमपंथियों के षड्यंत्रों, मतांतरण, लव-जिहाद और आतंकवाद से संकटग्रस्त है। ताजा मामला मध्यप्रदेश का है जहां मतांतरण व आतंकी गतिविधियों में लिप्त एक आंतकी संगठन के 5 लोगों को एटीएस पुलिस ने गिरफ्तार किया है। सभी अंतरराष्ट्रीय इस्लामी आतंकी संगठन एचयूटी (हिज्ब-उत-तहरीर) से जुड़े हैं जो कि प्रतिबंधित होने से पूर्व 'तहरीर-ए-खिलाफत' के नाम से जाना जाता था।

खास बात यह है कि पकड़े गए मो.सलीम, अब्दुल रहमान, मो. अब्बास अली, शेख जुवैद और मो. हमीद जो मतांतरण से पूर्व में हिंदू ही थे, को ब्रेनवॉश कर उन्हें आतंकी गतिविधियों में शामिल किया गया। एटीएस ने देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने पर इससे पहले 11 युवकों को पकड़ा था। पकड़े गए सभी आरोपियों के पास से विस्फोटक बनाने की सामग्री, बड़ी संख्या में देश विरोधी जिहादी साहित्य एवं डिजिटल दस्तावेज मिले हैं। किसी को शक नहीं हो इसलिए सभी आरोपी जिम ट्रेनर, कम्प्यूटर टेक्नीशियन, दर्जी, ऑटो ड्राइवर के रूप में आमजन के बीच काम कर रहे थे।

विश्व के 60 से अधिक देशों में फैला आतंकी गिरोह एचयूटी पर 16 देशों में प्रतिबंध लग चुका है। लोकतांत्रिक प्रणाली के स्थान पर इस्लामिक शरिया कानून लाने के उद्देश्य से कार्यरत इस संगठन का पाकिस्तान, बांग्लादेश, यूरोप, दक्षिण एशिया, इंडोनेशिया जैसे देशों में भी व्यापक नेटवर्क है। बताया जाता है कि भोपाल, रायसेन, विदिशा, राजगढ़, छिंदवाड़ा जैसे कई स्थानों पर एचयूटी अपना जाल फैलाकर गतिविधियां संचालित कर रहा है।

भोपाल :

शादी से पहले मुस्लिम युवक दुल्हन को ले भागा

देश में दबाव डालकर धर्म परिवर्तन कराए जाने को लेकर कड़े कानून हैं, बावजूद इसके भोपाल का एक मुस्लिम युवक पिछले एक साल से एक युवती का विडियो बनाकर ब्लैकमेल कर रहा था, परेशान होकर परिजनों ने अपनी बेटी की शादी 30 मई की तय कर दी। जैसे ही युवक को ये बात पता चली वह 15 मई को ही युवती को भगाकर ले गया।

मामले की जानकारी होने पर परिजनों ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है। आरोपी युवक आदतन अपराधी है और वह पहले भी कई मामलों में जिलाबदर हो चुका था। उस पर इससे पहले बलात्कार के आरोप लग चुके हैं। बता दें कि मध्यप्रदेश सरकार ने ऐसे मामलों से निपटने के लिए कानून भी बनाया हुआ है।

सीकर :

मुस्लिम युवती से प्रेम की सजा मौत

मुस्लिम समाज द्वारा अपने लड़कों को हिंदू लड़कियों से निकाह कर उन्हें मतांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करने के समाचार बहुधा समाचार पत्रों में आते रहते हैं परंतु इसके उलट यदि किसी मुस्लिम लड़की ने हिंदू लड़के से विवाह कर लिया तो सामान्यतया वे इसे सहन नहीं कर पाते।

खण्डेला (सीकर) के 36 वर्षीय राजेन्द्र सैनी के साथ यही हुआ जिसे सास-ससुर व साले ने इतना मारा कि उसकी मौत हो गई।

राजेन्द्र ने दो वर्ष पहले खण्डवा (मध्यप्रदेश) की अमरीन से प्रेम-विवाह किया और जयपुर में रहने लगे। कुछ समय बाद अमीरन के घरवालों ने उसे बहला-फुसलाकर वापस बुला लिया। जब वह नहीं लौटी तो राजेन्द्र अपनी पत्नी व बेटी को लेने ससुराल पहुंचा। पत्नी के घरवालों ने उसे मार-पीटकर भगा दिया। ऐसा दो बार हुआ। बीती 13 मई को तीसरी बार जब वह अपने ससुराल गया तो पत्नी के भाई शकील, पिता मुमताज, मां मुन्नीबाई और परिवार के 8-10 लोगों ने राजू को बेरहमी से इतना मारा कि उसने दो दिन बाद अस्पताल में दम तोड़ दिया।

बात अकेले राजेन्द्र की नहीं है। उत्तर प्रदेश के बरेली (जियानगला) का सुनील कुमार, महाराष्ट्र (नांदेड़) का स्वप्निल नागेश्वर, कर्नाटक (कलबुर्गी) का विजय कुमार कांबले, तेलंगाना (हैदराबाद) का बी. नागराजू, दिल्ली (आदर्श नगर) का राहुल राजपूत, ये वे नाम हैं जो मुस्लिम युवती से प्रेम करने के कारण कट्टरपंथियों द्वारा मौत के घाट उतारे जा चुके हैं।

उदयपुर :

शादी से मना करने पर टुकड़े-टुकड़े कर देने की धमकी

अपने प्रेमजाल में हिंदू युवती को फंसा जबरन शादी का दवाब बनाकर धर्म परिवर्तन का एक मामला अंबा माता थाना क्षेत्र (उदयपुर) में पिछले दिनों दर्ज हुआ। होटल मैनेजमेंट का कोर्स कर रही युवती ने बताया कि आसिफ भुट्टो को जब उसने शादी के लिए मना किया तो उसने उसके टुकड़े-टुकड़े करने व मोबाइल नम्बर सोशल मीडिया पर वायरल कर देने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपी आसिफ के साथ उसके भाई खालिद पिता अब्दुल रज्जाक को रिपोर्ट के बाद गिरफ्तार किया है।

फिल्म देख युवती को हुआ अहसास

मतांतरण करने वाले प्रेमी को दिखाया जेल का रास्ता

मतांतरण व लव-जिहाद की सच्चाई को उजागर करने वाली फिल्म 'द केरल स्टोरी' देखने के बाद इंदौर के नंदा नगर की रहने वाली एक युवती को जब लगा कि उसके साथ भी ठीक वैसा ही हो रहा है जैसा फिल्म में दिखाया गया है तो वह थाने पहुंची और अपने प्रेमी मोहम्मद फैजान के विरुद्ध मतांतरण, लव-जिहाद, जबरन शारीरिक संबंध बनाने तथा मारपीट का मामला दर्ज कराया। युवती का कहना था कि फिल्म देखते समय उसने जब कुछ सवाल फैजान से किए तो उसने उसे धमका कर चुप रहने के लिए कहा। लेकिन फिल्म की सच्चाई ने उसकी आंखें खोल दी थी। **युवती का कहना था कि फैजान जैसे कट्टरपंथी लोग हिंदू युवतियों को बहला-फुसलाकर प्रेम का चश्मा पहना कर मतांतरण के काम में लगे हैं, ऐसे लोगों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए।**

झालावाड़ :

हिंदू नाबालिग बच्चियों के साथ छेड़छाड़, मारपीट और दुष्कर्म

इस्लामी चरमपंथियों के हौंसले राजस्थान में इतने बुलंद हो गए हैं कि अब वे हिंदू समाज की नाबालिग बच्चियों के साथ दुष्कर्म, मारपीट और छेड़खानी पर उतर आये हैं। ताजा घटनाक्रम झालावाड़ जिले का है जहां आरोपी इमरान व उसके दो साथियों ने दही खेड़ा कस्बे की अनुसूचित समाज की नाबालिग बालिका के घर में घुसकर न केवल छेड़छाड़ की वरन विरोध करने पर उसके साथ मारपीट भी की। यह घटना उस समय घटी जब 12 वर्षीय बालिका के माता-पिता मनरेगा में मजदूरी के लिए गए हुए थे।

बूंदी :

इंद्रगढ़ (बूंदी) जिले में आरोपी फिरोज ने 5 वर्षीय बच्ची को चॉकलेट दिलाने के बहाने बहलाकर उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास किया। हालांकि परिवार की सजगता से आरोपी को पकड़ लिया गया।

बूंदी तथा झालावाड़ की दोनों ही घटनाओं के बाद हिंदू समाज ने स्थानीय बाजार बंद रखते हुए प्रशासन के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन कर जल्द से जल्द कड़ी कार्रवाई करने की मांग रखी है। लेकिन प्रशासन का सकारात्मक रवैया नहीं होने के कारण समुदाय विशेष के लोगों का हौंसला दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। ●

शंकराचार्य ने कहा-

बच्चों को वैदिक-सनातन संस्कृति ज्ञान कराया होता तो आज लव जिहाद जैसे हालात नहीं बनते

बच्चों को कोई भी भाषा सिखाओ, पर संस्कृति से दूर न करें

हमने यदि हमारे बच्चों को वैदिक और सनातन संस्कृति, धर्म आदि का ज्ञान कराया होता तो उन्हें लव-जिहाद जैसी बुराई का सामना नहीं करना पड़ता। वर्तमान में कई जगह इस बुराई की बातें सामने आ रही हैं। कहीं न कहीं हमारी ये कमजोरी रही है कि हम बच्चों को संस्कृति का ज्ञान नहीं दे पाए हैं।

यह बात 1 जून को ज्योतिष पीठ के पीठाधीश्वर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद स्वामी ने कही। वे अमरख संरक्षक अंबेरी, उदयपुर के पांच दिवसीय अमरख मंदिर शिखर प्रतिष्ठा कार्यक्रम के समापन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आप अपने बच्चों को कोई भी भाषा सिखाओ, लेकिन संस्कृत से दूर मत करो। संस्कृत हमारी देवभाषा है, इसकी जड़ें गहरी हैं, यदि अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाना चाहते हैं तो पढ़ाइए, लेकिन उसे संस्कृत की महत्ता भी समझाइए।

उदयपुर

वागड़ जनजाति संस्कृति पर वृत्तचित्र व पुस्तक का लोकार्पण

वागड़ अंचल की जनजाति संस्कृति पर निर्मित वृत्तचित्र का लोकार्पण बीती 23 मई को उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में किया गया। इसके साथ ही 'जनजाति वीर नायक-नायिकाओं की गौरव गाथा' पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ।

इस अवसर पर केन्द्रीय जनजाति राज्यमंत्री रेणुका सिंह तथा वनवासी कल्याण आश्रम के अ.भा.नागरिक संपर्क प्रमुख श्री भगवान सहाय भी उपस्थित थे।

यह पुस्तक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली और अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा तैयार की गई। इसमें जनजाति नायक-नायिकाओं के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान को रेखांकित किया गया है।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

आषाढ़ मास की पूर्णिमा जिसे 'गुरु पूर्णिमा' तथा 'व्यास पूर्णिमा' भी कहते हैं, के दिन गुरु की पूजा-अर्चना कर उनका आशीर्वाद लेने की परम्परा हिंदू समाज में प्राचीन काल से है।

हिंदू समाज के श्रेष्ठ महापुरुषों, जननायकों आदि ने भी गुरु पूजा सर्वोपरि मानते हुए जीवन निर्माण में अपने गुरु की इच्छा के अनुरूप अपना जीवन हिंदू समाज व संस्कृति तथा भारत की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित किया।

गुरु पूजा की यह परम्परा आज भी निर्बाध रूप से हिंदू समाज के सभी पंथों, मतों और संप्रदायों में दृष्टिगोचर होती है। एक आम धारणा यह भी है कि 'गुरु' के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, गुरु इस भव सागर से मुक्ति दिला सकता है। इसीलिए हिंदू समाज का प्रत्येक व्यक्ति आज भी किसी न किसी श्रेष्ठ महापुरुष को अपने जीवन में 'गुरु' रूप में अवश्य स्वीकार करता है।

युग-युग से ज्ञान की ज्योति जिन्होंने जलती रखी तथा समाज का मार्गदर्शन किया, उन निस्वार्थ तथा जीवन समर्पण करने वाले ऐसे श्रेष्ठ गुरु के स्मरण तथा तर्पण का दिन है गुरु पूर्णिमा। धर्मशास्त्रों के अनुसार महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास का जन्म भी इसी दिन हुआ था इसीलिए इसे 'व्यास पूर्णिमा' भी कहा जाता है जो कि इस बार 3 जुलाई को पड़ रही है। इस दिन से परिव्राजक साधु-संत एक ही स्थान पर आगामी चार माह तक समाज जन को आत्म-कल्याण के साथ-साथ विश्व कल्याण और भ्रातृत्व प्रेम की शिक्षा-दीक्षा दिया करते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अक्षय प्रेरणा स्रोत के रूप में परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु माना है। इस पावन अवसर पर स्वयंसेवक राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति का संकल्प लेकर संघ शाखा पर गुरू पूजन का उत्सव मनाते हैं।

महर्षि दयानन्द की अनमोल गुरु दक्षिणा

वेद और शास्त्रों की शिक्षा पूर्ण होने पर दयानन्द अपने गुरु विरजानन्द जी के पास दो लौंग ले जाकर बोले,'गुरुजी, मेरी तरफ से गुरु दक्षिणा स्वीकार करें।' दो लौंग देखकर गुरु बोले, 'मुझे तुमसे यह साधारण गुरु दक्षिणा नहीं चाहिए। मैं तुमसे अनमोल दक्षिणा की आकांक्षा कर रहा हूं।' दयानन्द बोले,'गुरुजी, मैं आपको अनमोल दक्षिणा कैसे दूं?' गुरुजी मुस्कुराते हुए बोले,'तुम ही मुझे वह दक्षिणा दे सकते हो।'

गुरुजी बोले, 'तुम्हारे पास विद्या, प्रतिभा, योग्यता और सद्गुणों का अनमोल धन है। मैं तुमसे गुरु दक्षिणा में तुम्हारा ज्ञान और विद्या मांगता हूं। तुम अपनी विद्या के उपयोग से कुरीतियां दूर कर देश में नव-चेतना का संचार करो तथा मिथ्या आडम्बरों का उन्मूलन करते हुए विश्व में सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करो। अपने जीवन के अंत तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गुरु को दिए वचन का पालन करते हुए आर्य समाज की स्थापना कर समाज जागरण में महती भूमिका निभाई।

पहली रोटी गाय माता के नाम

मेरठ के विद्यालय ने शुरू की अभिनव पहल

हमारी सनातन संस्कृति में गाय को पूजनीय-वंदनीय माना गया है। धर्मशास्त्रों में ऐसा भी कहा गया है कि गौमाता में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास होता है। इसीलिए हमारे यहां पहली रोटी (गौ ग्रास) गाय के लिए निकालने की परम्परा रही है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार गाय को रोटी खिलाने से पितृ दोष में राहत मिलती है, घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है, घर के सदस्यों में सद्भाव-प्रेम-सामंजस्य बना रहता है, जीवन की सम्पन्नता और तरक्की के रास्ते खुलने का जिक्र भी किया गया है।

मेरठ के एक निजी विद्यालय ने अपने यहाँ एक अभिनव पहल 'पहली रोटी गाय की' प्रारम्भ की है। इसके अंतर्गत विद्यालय के बच्चे घर से आते वक्त अपने लंच के साथ गाय की रोटी भी लेकर आते हैं और स्कूल परिसर में लगे 'चपाती-बॉक्स' में रख देते हैं।

विद्यालय की इस प्रेरक पहल से आधुनिकता की दौड़ से जो बच्चे संस्कृति एवं परम्पराओं से दूर होते चले जा रहे हैं वे रोटी व गौमाता के माध्यम से सनातन संस्कृति से तो जुड़ेंगे, उनमें दया, कर्तव्य का भाव उत्पन्न होगा।

जयपुर

हजारों लोगों ने सामूहिक रूप से किया हनुमान चालीसा पाठ

बीती 3 जून को जयपुर के सांगानेरी गेट स्थित हनुमान मंदिर के सामने हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ करने इकट्ठे हुए हजारों लोग। सांगानेरी गेट से लेकर बड़ी चौपड़ तक पूरा जौहरी बाजार हनुमान भक्तों से भरा हुआ था।

चारदीवारी के इतिहास में पहली बार भक्तों ने सड़क पर बैठकर जैसे ही हनुमान चालीसा की चौपाइयां पढ़नी शुरू कीं, तो वातावरण भक्तिमय हो गया। बैंड और ड्रम वादकों की जुगलबंदी के बीच गूंजती शंख ध्वनि ने श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया। जय श्रीराम और भारत माता के जयकारों के बीच हुए इस आयोजन में युवाओं के साथ बड़ी संख्या में मातृशक्ति तथा संत-महंतों ने भी भाग लिया। उत्साही जनों ने श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की।

इस अवसर पर संत अमरनाथ जी महाराज ने कहा कि हनुमान चालीसा का पाठ व्यक्तिगत रूप से करने के साथ ही समय-समय पर सामूहिक रूप से भी करना चाहिए। इससे देश और समाज के संकट दूर होते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक महानगर टाइम्स के प्रधान संपादक श्री गोपाल शर्मा ने कहा कि अगली बार जब यहां हनुमान चालीसा होगी तो चारदीवारी की कोई सड़क खाली नहीं रहेगी। जयपुर की जनता जागृत हो रही है।

हनुमान चालीसा पाठ के लिए पूरे जौहरी बाजार को ध्वज पताकाओं से सजाया गया। बिजली के पोल और दोनों ओर बरामदों पर ओम अंकित केसरिया रंग की ध्वज पताकाएं लगाई गईं। व्यापारी समय पूर्व ही प्रतिष्ठान बंद कर वहाँ पहुंच गए थे।

श्री हनुमान चालीसा प्रबंध समिति के अध्यक्ष अमरनाथ जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ के दौरान सामाजिक सौहार्द्र, राष्ट्रीय एकता और समृद्धि की कामना की गई। जयपुर बम धमाकों के शहीदों और ट्रेन दुर्घटना (बालासोर) में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए भी सामूहिक प्रार्थना हुई।

प्रशासन की तुष्टिपूर्ण कार्रवाई

कार्यक्रम के बाद वायरल हुए एक वीडियो के आधार पर माणक चौक थाना पुलिस ने दो नाबालिक बच्चों को निरुद्ध कर मंदिर के पुजारी पं. भंवरलाल शर्मा के साथ समाजसेवी अजय यादव को पूछताछ के लिए जबरन थाने पर बैठाए रखा। सर्व समाज और विश्व हिंदू परिषद सहित कई धार्मिक और सामाजिक संगठनों ने समुदाय विशेष के दबाव में पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने को अन्यायपूर्ण और तुष्टिकरण की पराकाष्ठा बताया और पुलिस कमिश्नर को ज्ञापन सौंपा।

वमासा (सरोदा-सागवाड़ा)

गौ नस्ल सुधार एवं संवर्धन हेतु कथा व कलश यात्रा

11 हजार से अधिक मातृशक्ति ने निकाली कलश यात्रा

राजस्थान के वागड़ क्षेत्र की प्रमुख गाय व गोवंश माही किस्म की नस्ल सुधार व संवर्धन में सहयोग करने के उद्देश्य से संगीतमय भागवत कथा का आयोजन वमासा स्थित राधाकृष्ण गोशाला के प्रांगण में किया गया। भागवत कथा के शुभारम्भ पर 11 हजार से अधिक मातृशक्ति कलश यात्रा में सहभागी रहीं। 1 जून से आरम्भ इस आयोजन में ईश्वरानन्द ब्रह्मचारी ध्यानयोगी महर्षि उत्तम स्वामी महाराज, संत उमेशनाथ महाराज, मुख्य यजमान ईश्वरलाल चरपोटा सहित बड़ी संख्या में भक्तजन शामिल रहे। इस आयोजन से प्राप्त धनराशि का उपयोग वमासा स्थित गौ विज्ञान व गौ अनुसंधान केन्द्र के माध्यम से माही गोवंश की नस्ल सुधारने हेतु किया जाएगा।

बाल प्रश्नोत्तरी-36 के परिणाम

मनस्वी

तेजस

शिवम

मनीष

कृष्ण

1. मनस्वी कड़वासरा, नागौर
2. तेजस गुप्ता, महावीर नगर, कोटा
3. शिवम हरितवाल, रतनगढ़, चूरू
4. मनीष कुमार, बागरा, जालोर
5. कृष्ण शर्मा, नायला, जयपुर
6. दिव्यांशी जंगम, अटरू, बारां
7. पार्थ गर्ग, करतारपुराफाटक, जयपुर
8. सुनिधि अरोड़ा, श्रीगंगानगर
9. वर्षा गोयल, तिजारा, अलवर
10. लक्षित मेड़तवाल, पनवाड़, टोंक

प्रथम पांच विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर : 1.(क) 2.(क) 3. (क) 4.(क) 5.(क) 6.(क) 7.(क) 8.(क)9.(क)10.(क)

श्रद्धांजलि

विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव

जयंतश्रीकांत का निधन

विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव जयंत श्रीकांत सहस्रबुद्धे (57) का बीती 3 जून को असामयिक निधन हो गया। वे सितम्बर 2022 को एक सड़क दुर्घटना के बाद से उपचाराधीन थे। विज्ञान भारती के कार्यों को विश्व पटल पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए भारतीय विज्ञान एवं भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान विषय पर नया विमर्श खड़ा करने का आपने महती कार्य किया। मूलत: गिरगांव (मुंबई) में जन्मे श्री सहस्त्रबुद्धे ने मुंबई विश्वविद्यालय से बीएससी टेक्नो (इलेक्ट्रॉनिक)की शिक्षा प्राप्त कर भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर में नौकरी की। 1989 में नौकरी छोड़ संघ प्रचारक बनकर महाराष्ट्र में संघ कार्य में लगे। गोवा विभाग प्रचारक, कोकण प्रांत प्रचारक के बाद आप 2009 से लगातार विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव का दायित्व निभा रहे थे।

पाथेय कण द्वारा आयोजित 'रज्जू भैया स्मृति व्याख्यानमाला' के दौरान बतौर मुख्य वक्ता फरवरी 2019 में आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ था। पाथेय कण परिवार आपको सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

रांची

भारतीय किसान संघ की तीन दिवसीय अ.भा. कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

भारतीय किसान संघ की तीन दिवसीय अखिल भारतीय कार्यकारिणी की बैठक झारखंड के रांची स्थित बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में संपन्न हुई। इस अवसर पर संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख व भारतीय किसान संघ के संपर्क अधिकारी श्री रामलाल ने कहा कि वर्तमान व संभावित चुनौतियों में किसान संघ के शीर्ष नेतृत्व पर बड़ी जिम्मेदारी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी कार्य व्यवस्था बनाकर व्यवस्था परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन करते हुए सकारात्मक विमर्श खड़ा करना होगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बद्रीनारायण चौधरी ने 2024 वर्ष को संगठन कार्य के विस्तार की दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण बताया।

उदयपुर

बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

प्रताप गौरव केन्द्र 'राष्ट्रीय तीर्थ' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री रामदत्त चक्रधर ने बिरसा मुण्डा को उनकी पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित कर कहा कि बिरसा मुंडा न केवल वनवासी समाज में धर्म के प्रति आस्था जगाने वाले महापुरुष थे, बल्कि स्वतंत्रता के लिए अलख जगाने वाले नायक थे।

उदयपुर

गंगा आरती एवं पर्यावरण प्रतियोगिताएं

उदयपुर महानगर पर्यावरण गतिविधि द्वारा गणगौर घाट पर गंगा आरती का आयोजन किया गया। द जील मार्शल आर्ट एंड फिटनेस पॉइंट एवं पर्यावरण संरक्षण गतिविधि उदयपुर महानगर के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्लोगन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता व विचार अभिव्यक्ति प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। साथ ही अर्थ ब्रिगेड फाउंडेशन के सौजन्य से परिंडे भी वितरित किए गए।

जयपुर

क्रीड़ा भारती का सूर्य नमस्कार शिविर

क्रीड़ा भारती द्वारा तीन दिवसीय सूर्य नमस्कार शिविर का आयोजन प्रताप नगर स्थित आदर्श विद्या मंदिर में किया गया। शिविर में जयपुर प्रांत के 16 जिलों के 53 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पाली

छोटी रानी में महाराणा प्रताप जयंती मनाई

छोटी रानी में क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक तनसिंह जी की जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के अन्तर्गत महाराणा प्रताप की 483वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर सुमेरपुर विधायक जोराराम कुमावत ने महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष और त्याग की अमरगाथाओं के बारे में बताया। विधायक खुशवीर सिंह जोरावर ने महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

जयपुर

छत्रपति शिवाजी हिंदू साम्राज्य स्थापना के साढ़े तीन सौ वर्ष : भगवा वाहन रैली

छत्रपति वीर शिवाजी द्वारा स्थापित हिंदू साम्राज्य के 350वें वर्ष के उपलक्ष्य में गालव नगर द्वारा संपूर्ण शहर में होते हुए भगवा दुपहिया वाहन रैली निकाली गई। भगवा वाहन रैली में छत्रपति वीर शिवाजी की वाहन झांकी भी सजाई गई। मालवीय भाग के गोपाल नगर में 'स्वराज्य की प्रत्यक्ष अनुभूति' व्याख्यान का आयोजन हुआ।

बारां

संस्कृत भारती का भाषा बोधन वर्ग

संस्कृत भारती के तत्वावधान में विभाग स्तरीय संस्कृत भाषा बोधन वर्ग का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि काठिया बाबा आश्रम के आचार्य परमानंदजी महाराज रहे। संस्कृत भारती एक लाख से अधिक संभाषण शिविरों के माध्यम से अनेक लोगों को संस्कृत संभाषण सिखा चुकी है। पिछले 41 वर्षों से कार्य कर रही संस्कृत भारती का 26 देशों में कार्य चल रहा है। यहां मात्र 20 घंटों में संस्कृत में वार्तालाप करना सीख सकते हैं।

प्रशासनिक सेवा में विद्या भारती के पूर्व विद्यार्थियों का चयन

बीती 23 मई को संघ लोग सेवा आयोग द्वारा जारी सिविल सेवा परीक्षा-2022 के परिणामों में विद्या भारती के 14 पूर्व छात्राओं का चयन हुआ है। राजस्थान के जोधपुर प्रांत से 4, चित्तौड़ प्रांत से 2 तथा जयपुर प्रांत से 3 विद्यार्थियों का चयन शामिल है।

बीकानेर

सर्वोत्तम लैब की सूची में आदर्श विद्या मंदिर

भारत सरकार द्वारा जारी सर्वोत्तम (अटल) लैब की सूची में गंगाशहर (बीकानेर) के आदर्श विद्या मंदिर उ.मा. का नाम भी आया है।

जन्मदिवस : 6 जुलाई

लक्ष्मीबाई केलकर

सामान्य सी दिखने वाली नागपुर की जिस महिला ने नारी-शक्ति के संगठन की कल्पना की उस महिला का नाम था श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर जिन्हें बाद में 'मौसीजी' के नाम से प्रसिद्धी मिली। मौसी जी के व्यक्तित्व में कैसी असामान्य प्रतिभा थी, यह राष्ट्र सेविका समिति के आज के विराट स्वरूप को देखकर भली-भांति समझा जा सकता है।

क्रांतिकारी विचारों से ओतप्रोत मौसीजी ने अल्पायु में स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरणा लेकर आजीवन 'स्वदेशी' का उपयोग करने का संकल्प लिया। महाराष्ट्र में छुआछूत जैसी विकृति के बाद भी उन्होंने अस्पृश्य कहे जाने वाले समाज की एक बहिन को अपने यहां काम पर रखकर समरसता का उस कालखण्ड में जो क्रांतिकारी कदम उठाया वह उनकी समाज परिवर्तन हेतु संकल्प की दृढ़ता को सिद्ध करता था।

समाज जागरण के माध्यम से मातृ-शक्ति का स्वाभिमान जागृत करने की आकांक्षा ने ही उन्हें राष्ट्र सेविका समिति प्रारम्भ करने की प्रेरणा दी। हालांकि उनके इस विचार में कहीं न कहीं संघ संस्थापक डॉ.हेडगेवार से हुई भेंट भी शामिल थी। समिति की स्थापना के साथ ही संगठन कार्य में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए 42 वर्षों तक अथक परिश्रम के साथ संगठन कार्य किया, फलस्वरूप आज देश ही नहीं देश के बाहर भी अनेक स्थानों पर समिति का कार्य दिखाई देता है। जीजाबाई के मातृत्व, अहिल्याबाई के कर्तृत्व तथा लक्ष्मीबाई के नेतृत्व को आदर्श मानते हुए उन्होंने अपने जीवन काल में कन्या पाठशाला, भजन मण्डली, योग केन्द्र, बालिका छात्रावास जैसे अनेक बालिका व महिला उत्थान के प्रकल्प प्रारम्भ कर मातृशक्ति में सबल, सक्षम और नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों का बीजारोपण किया।

(मनोज)

गीता- दर्शन

दु:खेष्वनुद्विग्नमना: सुखेषु विगतस्पृह:।
वीतरागभयक्रोध: स्थितधीर्मुनिरुच्यते।। (2/56)

स्थिर बुद्धि के संदर्भ में श्रीकृष्ण कहते हैं-

दु:खों की प्राप्ति होने पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखों की प्राप्ति में जो सर्वथा नि:स्पृह है तथा जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिर बुद्धि कहा जाता है।

आओ संस्कृत सीखें-21

आपने समाचार सुना क्या?

भवान् वार्तां श्रुतवती किम्?

यह सुनकर मुझे बहुत दु:ख हुआ।

ऐतद् श्रुत्वा माम् बहु दु:खम् अभवत्।

घरेलु नुस्खा

पेट गैस : जीरा, अजवाइन, काला नमक, हींग को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण तैयार कर लें, जब भी गैस की शिकायत हो तो दिन में 2 बार गुनगुने पानी से (एक छोटी चम्मच) लेने से गैस, आफरे में राहत मिलती है।

कुकिंग टिप्स

- यदि दाल या सब्जी बनाते समय जल जाए तो एक सूती कपड़े में इलायची, लोंग, तेजपत्ता को बांध कर उसमें डाल दें। कुछ ही देर में सब्जी से जलने की महक दूर हो जायेगी।

जंक फूड कर रहा है नींद हराम

स्वीडन की उपसला युनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट के अनुसार जंक फूड खाने से लोगों में गहरी नींद लगातार प्रभावित हो रही है। साथ ही व्यक्ति की रोग-प्रतिरोधक क्षमता व स्मरण शक्ति पर भी इसका बुरा असर होता है।

उल्लेखनीय कथन

ऑस्ट्रेलिया का कोई भी नेता पीएम मोदी की तरह दुनिया के दूसरे कोने में 20 हजार लोगों को इकट्ठा करने में सक्षम नहीं है। ये एक असाधारण घटना थी और मैं वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी की मेजबानी में भारतीय समुदाय के काम की सराहना करता हूँ।

- पीटर डटन, *ऑस्ट्रेलिया में विपक्ष के नेता*

जांचें की आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें-

सामान्य- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. महाभारत युद्ध में पाण्डवों की ओर से लड़ने वाला एक मात्र कौरव कौन था?
2. किस देश की मुद्रा पर भगवान गणेश का चित्र छपा रहता है?
3. भारत की सबसे पवित्र गंगा नदी किस स्थान से मैदान में प्रवेश करती है?
4. मिथिला नरेश राजा जनक का मूल नाम क्या था?
5. दशम् गुरु गोविन्द सिंह जी के पश्चात् गुरु गद्दी पर कौन आसीन हुए?
6. एक कालजयी ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' के रचनाकार कौन थे?
7. विद्युत सैल का पूरा वर्णन किस संहिता में आया है?
8. महारानी अवंतीबाई किस रियासत की महारानी थीं?
9. पन्नाधाय ने अपने जिस पुत्र का बलिदान किया उसका नाम क्या था?
10. 'राजस्थान सेवा संघ' की स्थापना करने वाले क्रांतिकारी कौन थे?

उत्तर इसी अंक में

गौरव का क्षण

- एमपॉक्स वायरस से संबंधित खोज के लिए भारतीय मूल के सात्विक कन्नन को यंग सांइटिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

बोधकथा

सच्चा धर्मात्मा

एक राजा के चार पुत्र थे। एक दिन राजा ने चारों पुत्रों को बुलाकर कहा - जाओ, किसी धर्मात्मा को खोजकर लाओ। जो सबसे बड़े धर्मात्मा को लाएगा, उसी को गद्दी पर बिठा दूंगा। कुछ दिन बाद बड़ा पुत्र अपने साथ एक सेठ को लाया। उसने राजा से कहा- यह सेठ जी खूब दान-पुण्य करते है। इन्होंने कई मंदिर, तालाब, प्याऊ बनवाई है। इसके बाद दूसरा पुत्र ब्राह्मण को लेकर आया और बोला- महाराज ये चारों धाम की यात्रा पैदल करके आए हैं और कभी असत्य भाषण नहीं करते।

फिर तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर आया और कहा ये तपस्वी पूरे दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं। गर्मी में पंचाग्नि जलाकर और जाड़ों में शीतल जल में खड़े रहकर ध्यान करते हैं।

चौथा पुत्र जब लौटा, तो अपने साथ मैले-कुचैले वस्त्र पहने एक ग्रामीण को लेकर आया और बोला- ये एक कुत्ते के घाव धो रहे थे। मैं इन्हें नहीं जानता। आप ही पूछ लीजिए धर्मात्मा हैं अथवा नहीं?

राजा ने पूछा- क्या तुम धर्म-कर्म करते हो? युवक ने जवाब दिया- मैं तो अनपढ़ हूँ। धर्म-कर्म के विषय में नहीं जानता। हां, कोई बीमार हो तो उसकी सेवा अवश्य कर देता हूँ। कोई भूखा अन्न मांगता है, तो अन्न दे देता हूँ और कोई वस्त्रहीन वस्त्र मांगता है, तो अपने तन से भी उतारकर उसे दे देता हूँ। राजा ने कहा 'यही सबसे बड़ा धर्मात्मा है, और अपने चौथे पुत्र का राज्याभिषेक कर दिया।

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी-38)

(अपनी पासपोर्ट फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम ..... कक्षा.....

पिता का नाम .....

उम्र ..... पूर्ण पता.....

.....

..... पिन.....

मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी - 38

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों, 16 मई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। 10 से अधिक प्रतियोगियों के उत्तर सही पाए जाने पर निर्णय लॉटरी से होगा। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि -5 जुलाई, 2023**

1. जनजाति सुरक्षा मंच की डी-लिस्टिंग महारैली का आयोजन कहाँ हुआ?
(क) उदयपुर (ख) जोधपुर (ग) बाड़मेर (घ) बीकानेर

2. विस्थापित हिंदुओं पर बुलडोजर चलाने की घटना किस जिले की है?
(क) जयपुर (ख) सीकर (ग) जैसलमेर (घ) श्रीगंगानगर

3. 'जल्लीकट्टु' किस प्रदेश का धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम है?
(क) कर्नाटक (ख) केरल (ग) तमिलनाडु (घ) ओडिशा

4. ऑस्ट्रेलिया के वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम बताइए?
(क)एंथोनी अल्बानीज (ख)अल्फ्रेड (ग)जोसेफ लियोन्स (घ) जुलिया गिलार्ड

5. भगवान झूलेलाल का भव्य नव-निर्मित मंदिर जयपुर में कहाँ बना है?
(क) आदर्श नगर (ख) राजपार्क (ग) जवाहर नगर (घ) प्रताप नगर

6. समाज सेवा में समर्पित साध्वी समदर्शी किनकी शिष्या हैं?
(क) साध्वी ऋतम्भरा (ख)साध्वी प्राची (ग) साध्वी प्रज्ञा (घ) साध्वी प्रियंका

7. जीजाबाई का स्वर्गवास शिवाजी के राज्याभिषेक के कितने दिनों बाद हुआ?
(क) ग्यारह दिन (ख) दस दिन (ग) तेरह दिन (घ) बारह दिन

8. अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक दिवस (23 जून) की शुरुआत कब हुई?
(क) वर्ष 1948 (ख) वर्ष 1945 (ग) वर्ष 1950 (घ) वर्ष 1954

9. संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को कब मंजूरी दी गई?
(क) 21 जून 2014 (ख)21 जून 2015(ग)21 जून 2011(घ) 21जून 2010

10. क्रांतिकारी नलिनीकांत बागची का बलिदान दिवस कब मनाया जाता है?
(क)18 जून (ख) 16 जून (ग) 21 जून (घ) 28 जून

गणित पहेली

दी गई आकृति में सीधी रेखाओं की कुल संख्या बताइए

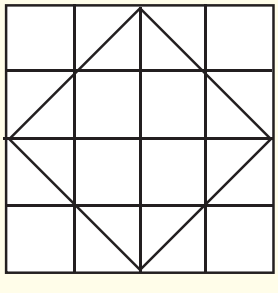

उत्तर : चौदह

वर्ग पहेली

वर्ग में 10 रामायण महिला पात्रों के नाम दिए हुए हैं। इनके नाम खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए।

कौ	श	ल्या	उ	श	चु	लं
मा	रा	हि	र्मि	म	ब	नी
सी	ता	अ	ला	धा	पी	री
री	कि	न	मं	मा	द	नी
सु	मि	सू	र्प	दो	चं	पा
रू	मि	या	मं	ज	हा	णि
श्री	नी	त्रा	त्रि	ज	टा	री

उत्तर: शबरी, तारा, अनसूया, मंदोदरी, अहिल्या, उर्मिला, कौशल्या, सीता, सुमित्रा, त्रिजटा

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

43

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

ब्रिटेन व अमेरिका के बढ़ते हमलों से जापानी सेना का सहयोग बिखरने लगा... आजाद हिन्द सेना को जीते हुए क्षेत्रों से भी पीछे हटना पड़ा नेताजी ने भी साथियों के दबाव में परिस्थितिवश रंगून से बैंकाक जाना स्वीकार किया... जाने से पूर्व पत्र द्वारा जवानों को सम्बोधित किया...

कई स्थानों पर नुकसान होने के बावजूद पूर्वी एशिया के देशों में इस स्वतंत्रता संग्राम की दूसरी जयंती मनाई... लाखों भारतीयों ने आजाद हिन्द सरकार का समर्थन किया

सिंगापुर, मलेशिया, इन्डोनेशिया, बर्मा आदि में (4 से 10 जुलाई 1945) रैलियाँ-समारोह

सिंगापुर (सियोनान) में नेताजी ने शहीद सैनिकों की स्मृति में 'शहीद स्मारक' स्थापित कर श्रद्धांजलि दी...

आजाद हिन्द फौज के सुप्रीम कमांडर नेताजी अपने सैन्य अधिकारियों के साथ दूसरे दौर के युद्ध की रणनीति बना रहे थे... पूर्वी एशिया के लाखों भारतीय तन-मन-धन से नेताजी के साथ थे... सेना अधिक उत्साह के साथ युद्ध को आतुर थी... तब ही नेताजी को...

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-30 जून,2023)
(10 जून को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
1 से 15 जुलाई, 2023
(आषाढ़ शुक्ल 13 से प्र.श्रावण (शुद्ध) कृष्ण 13 तक)

जन्म दिवस
6 जुलाई (1901) - डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयंती
6 जुलाई (1905) - लक्ष्मीबाई केलकर 'मौसी जी' जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि
3 जुलाई (2005) - स्वामी रामसुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि
4 जुलाई (2015) - वरिष्ठ प्रचारक सोहनसिंह जी की पुण्यतिथि
13 जुलाई (1660)- बाजीप्रभु देशपाण्डे का बलिदान
14 जुलाई (2003)- प्रो.राजेन्द्र शर्मा 'रज्जू भैया' की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर
1 जुलाई - राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस
4 जुलाई (1943) - नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च अधिकारी बने
11 जुलाई - विश्व जनसंख्या दिवस
15 जुलाई (1913) - गदर पार्टी की स्थापना

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार
19 जून - गुप्त नवरात्र प्रारम्भ
27 जून - भड़ल्या नवमी
29 जून - देवशयनी एकादशी, चातुर्मास प्रारम्भ
1 जुलाई - अमरनाथ यात्रा प्रारंभ
3 जुलाई - गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा)

पंचांग - आषाढ़ (शुक्ल पक्ष)
युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके 1945 (19 जून से 3 जुलाई, 2023 तक)

गुप्त नवरात्र प्रारंभ- 19 जून, **विनायक चतुर्थी** - 22 जून, **स्कन्ध पंचमी (जैन)** -23 जून, **अष्टानिका महापर्व प्रारम्भ (जैन)** - 26 जून, **भड़ल्या नवमी**-27 जून, **गुप्त नवरात्र समाप्त**- 27 जून, **देवशयनी एकादशी व्रत**-29 जून, **चातुर्मास प्रारम्भ**- 29 जून, **शनि प्रदोष व्रत**-1 जुलाई, **चांद पूर्णिमा व्रत**- 2 जुलाई, **चौमासी चौदस (जैन)**- 2 जुलाई, **आषाढ़ी पूर्णिमा (सत्यनारायण व्रत, गुरु पूर्णिमा)** - 3 जुलाई, **अष्टानिका महापर्व समाप्त (जैन)**- 3 जुलाई

ग्रहस्थिति
चन्द्रमा : 19-20 जून **मिथुन** राशि में, 21-22 जून स्वराशि **कर्क** में, 23 से 25 जून **सिंह** राशि में, 26-27 जून **कन्या** राशि में, 28 से 30 जून **तुला** राशि में, 1-2 जुलाई नीच की राशि **वृश्चिक** में तथा 3 जुलाई को **धनु** राशि में गोचर करेंगे।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में **गुरु** व वक्री **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **शुक्र** पूर्ववत मिथुन व कर्क राशि में भ्रमण करेंगे। **मंगल** 30 जून को रात में 2:43 बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 24 जून को दोपहर 12.41 बजे **वृष** से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे।

प्रतिष्ठा में,

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय नगर, क्षेत्र, मालवीय नगर-302017 **सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल**
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 जून,2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर